बिहारीसतसई

जिसमें
मात्रा बर्ण और कबिताई सहित श्रीबिहारीलाल
जी कृत सामयिक उदाहरणों के सातसौ
दोहे बर्णित हैं
और
उन्हीं प्रति दोहों पीछे कबीन्द्रकल्पद्रुम श्रीपण्डित
कृष्णदत्त कबि ने उत्तम २ कबित्त और पिंगल
शास्त्रानुसार दोहे व कबित्त की दीर्घ लघुमात्रा
तथा बर्णादि संख्या अतीव रोचकतासे
वर्णन किया है

छठवीं बार

लखनऊ
मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी
मार्च सन् १९०५ ई० ॥

१२ जुज़ ४ वर्क़

इस मतबेमें जितने प्रकारकी काव्यकी पुस्तकें छपीहैं उनमें से कुछ नीचे लिखीजाती हैं॥

नवीनसंग्रह क़ी॰ ।)।

जिसमें कबित्त सवैया भजन होलीआदि शृंगाररसके प्रेमी पुरुषों को अतीव आनन्ददायक हैं॥

मनमोहनी क़ी॰ ।)॥

जिसमें हज़ारों तरह के राग ऐसे २ चुहचुहाते लिखेगयेहैं कि बयान से बाहर हैं रसिकों के वास्ते तो सजीवनही हैं॥

हफ़ीज़ुल्लाहखांकाहज़ारा क़ी॰ ॥)=॥

इसमें नानाप्रकारके बहुतही उत्तम२ सब २१८४ कवित्त लिखे गये हैं स्थान २ पर तसवीरें भी बनी हैं॥

महिपालसिंहसरोज क़ी॰)=

इसमें सब तरह के २०१ कवित्त बहुत अच्छे २ हैं॥

नानार्थनवसंग्रहावली क़ी॰ ॥)

परिडत मातादीनशुक्लरचित सात पोथी का संग्रह है (१) संग्रहावली (२) रामायणमाला (३) रामायणगीताष्टक (४) ज्ञानदोहावली (५) रससारिणी (६) तिथिबोध (७) मातृदत्त कृतपिंगल अक्षर बहुतपुष्ट कि बृद्ध और बालकभी पढ़सक्केहैं॥

छन्दोर्णवपिंगल क़ी॰)=

जिसमें मात्रावृत्त, वर्णबृत्त, मेरु, मर्कटी, पताका, लघुगुरु स्थापन रीति और सब छन्दोंके दृष्टान्तसहित रूपहैं॥

अथ बिहारीसतसई सटीक ॥

उदाहरणसहित प्रारम्भ ॥

करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६

दो० मेरी भव बाधा हरो राधा नागरि सोय ॥
जातनकी झाईंपरे श्याम हरितद्युति होय ॥ १ ॥

यह मंगलाचरण है तहां ग्रन्थकर्ता कवि श्रीराधिकाजी की स्तुति करता है राधा और हू है याते जातन की झांई परे श्याम हरित द्युति होय या पद तें वृषभानुसुताकी प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ जाकी प्रभा अवलोकतही तिहूं लोककी सुन्दरता गहिवारी । कृष्ण कहैं सरसीरुहनैनको नाम महासुदमंगलकारी ॥ जातनकी झलकैं झलकैं हरित द्युति श्यामकी होत निहारी । श्रीवृषभानुकुमारि कृपाकै सुराधा हरो भव बाधा हमारी ॥ १ ॥ स्वकीयावर्णन ॥ नरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० राति द्यौस हूंमें रहै मान न ठिक ठहराय ॥
जेतो औगुण ढूंढिये गुणै हाथपर जाय ॥ २ ॥

स्वकीया नायिकाहै नायिकाको वचन सखी प्रतिहै नायकके अवगुणहू याको गुण भासत हैं ॥ सवैया ॥ जो हूं झकौं तौ खरोही लहू है करै मनुहार अनूठी अनूठी । औगुण ढूंढे हूं हाथ न आवत सौगुण ही रहै ऊठि सी ठूठी । शील

सुभाव सदा निबहै हँसि बोलै अमी बरषा मनुबूठी । हौंस हिये निशि चौसरहै मनमोहन सों कबहूं नहिं रूठी ॥ २॥ मुग्धा पयोधर अक्षर ३६गुरु१२ लघु २४ ॥

दो० नहिंपराग नहिंमधुरमधु नहिंबिकासयह काल ॥
अली कलीही सों बँध्यो आगे कौन हवाल ॥ ३ ॥

यह दोहा यह नायिका के तनमें यौवन अबहीं आयो नाहीं अरु नायक की आसक्ति पहलेही अधिक देखी सो सखी सखी सों भ्रमको प्रसंग करि कहतहै ॥ सवैया ॥ नाहिं पराग नहीं मकरंद अजौं प्रकटी न सुवास बिकासर । जानेको आगे वाहूं है कहागति ऐसो पग्यो अबहीं इक आसर ॥ फूली घनी फुलवारी रसाल पै काहूको मानत नेक न तासर । रीझरली मति कंजकली पै अली मड़रानौ रहै निशिबासर ॥ ३ ॥

दो० लालअलोलकलरकई लखिलखिसखीसिहाति ॥
आजकालिहमेंदेखियतु उरउकसौंहींभांति ॥ ४ ॥

यह नायिका को यौवन अंकुरित है सो सखी नायक सों निवेदन करतु है नायिका अंकुरितयौवना ॥ सवैया ॥ कैसी सुहाई लला लरकाई में यौवन ज्योति लै सौंहीं भई है । बाल विनोदन ते उचटी रुचि काम कला सुरसौंहीं भई है ॥ बाढ़ी बिलोकि सिहात सखी बतियानकी खान हसौंही भई है । आजुही कालिहिमें बालबधूकी कछू छतियां उकसौंहीं भई है ॥ ४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० हेरि हिंडोरेगगनतें परी परीसी टूटि ॥
धरीधाय पिय बीचही करी खरी रसलूटि ॥५॥

यह नायिका मुग्धा है हिंडोरे तें नायकको देखिके लाजके आधिक्यतें भाजिबेको भई सो टूटिपरी सखीको बचन सखीसों ॥ सवैया ॥ बाल छबीली सखीनके संग बनी ठनी झूलति रंग हिंडोरे । नंदललै लखि ऊंचे ते टूटपरी ज्यों परी अति लाजनिहोरे ॥ चालेको चूंदरी चारु कुसुंभी सुगन्ध सनी दमकै तनगोरे । प्राणपियारे ने बीचही धाय करी रस लूटि भई भरि कोरे ॥ ५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु ११ लघु २४ ॥

दो० भावकउभरोहोभयो कछुकपस्यो भरुआय ॥

सीपहराकेमिषहियो निशिदिनहेरब जाय ॥ ६ ॥

यह नायिका मुग्धा ज्ञातयौवना सखी नायक सों कहत है सखी को बचन सखी सों है ॥ कबित्त ॥ प्यारे नँदलाल वह बाल अलबेली नव यौवन की ज्योति दिन द्वैकवे भरति है। दम्पति चरित्र चित्र दुरचितवन लागी काम की कहानी काहू कान न धरति है ॥ रचक उरोजन की कोर उकसौंहीं भई नैसकल ज्यौंही सी चितौंनिहू ढरति है। सबकी बचाय दीठि निज छाती बारबार गुञ्जहार मिष करि हेरबो करति है ॥ ६ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तियतिथितरुणकिशोरबयपुण्यकालसमदोनु ॥
काहू पुण्यन पाइयतु बैससंधि संक्रोनु ॥ ७ ॥

यह नायिका लरकाई अरु तरुणाई बैस की संधि है सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ उत सूरज राशि तजै जबलौं नहीं दूसरी राशि दबावतु है। तबलौं वह अंतर को समयो अति उत्तम वेद बतावतु है ॥ इतहू जब बैस किशोर दिनेशहु हू बय अंतर आवतु है। सुकृती कोउ पूरब पुण्यनते बिबिसंक्रमको छनु पावतु है॥७॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटी न शिशुताकीझलक झलक्यो यौवनअङ्ग ॥
दीपतिदेहदुहूनमिलिदिपतिताफतारङ्ग ॥ ८ ॥

यह दोऊ बैस को संगम है सखी सखी सों कहति अथवा नायक सों सखी निवेदन करतु है ॥ सवैया ॥ बानि वहै बतियान केहै पै कछूक हरैं मुसकान ढरी है। सूधी चितौन बिलोकतिहै परि लोकता रञ्चक जानिपरी है॥ छूटी नहीं शिशुता कीं प्रभा नवयौवनकी द्युति आनि धरी है। सङ्ग दुहून के ताफता रङ्ग दिपै तन की द्युति रंग भरी है ॥ ८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अपने अङ्गके जानिकै यौवननृपतिप्रवीन ॥
स्तनमननैननितंबको बड़ोइजाफाकीन ॥ ९ ॥

यह नायिका नवयौवन भूषिता मुग्धा सखी को बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ यौवन भूप महापरवीन विचक्षणताइ हरी तटई है। राज लह्यो नवला तनको कटि शत्रुकी सम्पति लूटिलई है ॥ दूरि किये शिशुता के सहायक चातुरता चित चारु

भई है। नैन उरोज नितम्बन को अपने गनिकै बढ़वारि दई है ॥ ९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० अरतेटरतनबरपरे दई मरकमनुमैन ॥
होड़ाहोड़ीबढ़िचलेचितचतुराईनैन ॥ १० ॥

यह नायिका को यौवन आयो है ॥ सुचतुराई नैन बढ़न लागे ॥ सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नैनन की बढ़वारि लखैं चित चातुरी की उमँगी अधिकाई। चातुरी की अधिकाई लखी तब नैनन और गही सरसाई ॥ कृष्ण कहैं बर बांध्यो दुहून इते पर धौंस मनोजकी पाई। होड़ी ये होड़ा चली बढ़ मानो बिलोचन औ चितकी चतुराई ॥ १० ॥ पयोधर अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० निरखिनवोढ़ानारितन छुटतिलरकईलेश ॥
भौप्यारोप्रीतममनोचहतचलनपरदेश ॥ ११ ॥

यह नायिका नवोढ़ा है याको यौवन देखि सौति निराश भई है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ कुंदन सी दिपै देह की दीपति मैनु मनो निज मोहनी घालतु। छूटति सी लरिकाई कछू तरुणापन रङ्ग तरङ्ग उकालतु ॥ बालवधू तन यौवन आवत सौतिन के उर शूलसी सालतु। प्राणन ते अति प्यारो लग्यो पति मानु कहो परदेश को चालतु ॥ ११ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० गाढ़ेठाढ़ेकुचनठिलिकोपियहियठहराय ॥
उकसोहैंईतोहियेदईसबैउकसाय ॥ १२ ॥

यह नायिका नवोढ़ाहै नायक की चाही सों बहुत आसक्तिहै सो सखी नायक सों कहति है ॥ सवैया ॥ पीनपयोधर भूधर सी तिय तो उर है पर ह्वैहै जबै। को बसि है पिय के हिय भामिनि सुन्दर रूप अनूप तबै ॥ नेक बिलोचन लोल भये नवयौवन ज्योति जगी न अबै। तेउकसे उर जातहुही पियके हियते उकसाय सबै ॥ १२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बाढ़ततोउरउरजभरु भरतरुणाईविकास ॥
बोझनसौतिनकेहियेआवतरुंधीउसास ॥ १३ ॥

यह नायिका नवयौवनभूषिता है याको देखिकै सौतिन के दुःख होत है सखी नायिका सों कहति है ॥ सवैया ॥ तोसी तुही रमणी कमनीय भये अति तो बश प्यारे बिहारी। बैस बिलास जग्यो जबते तबते यह अद्भुत बात निहारी ॥ बाढतु है नवनागरि तो उरमें उर जातनु को भरु भारी। ताभरि सौतिनसास उसासनि पीरहि सौं हियहोत दुधारी ॥ १३ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० मानहुमुखदिखरावनी दुलहिनि करि अनुराग ॥
सासुसदनमनललनहूं सौतिनदयोसोहाग॥१४॥

यह नायिका नवोढा याको यौवन देखि नायक बश भयो अरु सौतिन हूं की सुहाग इन लीनो सो सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ गौन आई दुलहिनि लीनें बनवारी मानु जगर मगर होत भवन की भागु है। बिधिनैं सुधारी गुन चातुरी की सींव जाके रूप आगे रूप रतिको रतीकहू न लागु है ॥ मेरे जानु मुखदिखरावनी को नेगु जानि आपहीते सौंप दीनो कीनो अनुरागु है। सासुभवन दीनो प्यारेलाल्ल मनदीनो अरु प्रीति मनदीनो सौतिन सुहागु है॥ १४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० देहदुलहियाकीबढ़ै ज्योंज्योंयौवनज्योति ॥
त्योंत्योंलखिसौतिनसबैबदनमलिनद्युतिहोति १५

यह नायिका नवयौवना प्रोषिता नवोढा है याको यौवन बढत देखि सौतिन को मोह फीको होत है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मंथर गौनगहै पद पङ्कज मत्तगयंदन दूखन लागे। मैन के टोने से बैन भये तिनके सम ऊख मयूखन लागे॥ ज्यों वृषभानुलली तन यौवन ज्योति के लक्षण से अब लागे। त्यों त्यों बिलोकि भई मलिनद्युति सौतिन केमुख सूखन लागे ॥ १५ ॥ वारण अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० ज्योंज्योंयौवनजेठदिन कुचमतिअतिअधिकाति ॥
त्योंत्योंछिनछिनकटिछिपाछीनपरतनितजाति १६

यह नायिका आरूढयौवना है याको यौवन बढत है तैसे कुच बढत हैं तैसे कटि घटति है सो सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ तैसक बोध भोकञ्ज हिये जड़ता अलिनी मतिराम न भागी। चंचलता तम शेष रही अरुणोदय लाज कला चित

जागी ॥ तारक ज्योति घटी नवलाकटि चातुरता चकई अनुरागी । यौवन भानुकी आमदनी शिशुता रजनी तनु बीतन लागी ॥ १६ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

दो० नवनागरितनपुलकलहि यौवनआमिलजोर ॥
घटिवढ़ितेंबढ़िघटिरकम करीऔरकीऔर ॥ १७ ॥

यह नायिका के तन में यौवन आयो अंग बढ़ि हैं सो घटिभये अंग घटि हैं सो बढ़ि भये यह आमिल को परसंग करि सखी सखी सों कहति है अरु नायक को बचन सुन सखी को संभव है ॥ सवैया ॥ शोर पस्यो जु शरीर बिषे निकसी सिरकारगई लरकाई । ठौरहि ठौर भयो कछु और फिरी अँगअंग अनंग दुहाई ॥ आयगयो अफताली दोऊ कुच छाय धरे शिर श्याम दुहाई । आलमें लाल रसाल की सों सिकदार भई तनमें तरुणाई ॥ १७ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० भेटतबनतनभावतो चिततरसतअतिप्यार ॥
धरतलगायलगायउर भूषणबसनहथ्यार १८ ॥

यह नायिका मध्या लाज काम दोऊ समान हैं सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्यारी को नेह लग्यो हरि प्यारे सों ध्यानमें भाणरहे दिनराती । भेटबे को न उपाय बनै गुरुलोगन के उपहास सकाती ॥ जानके प्रीतमके तनके मिलके मिलबेको हिये उकलाती । भूषणवास अवासके कोन में वारहिवार लगावत छाती ॥ १८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छुटीनलाजनलालचौंप्योलखिनेहगिरेह ॥
सटपटातलोचनखरे भरेसकोचसनेह ॥ १९ ॥

यह नायिका मध्या लाज काम समानहै सखी सखी सों कहतिहै ॥ सवैया ॥ माइके में मनभावन को लखि प्यारी निशङ्क ह्वै देखि सकैना । देखिबे को तरसे हियरा दिखसाध लगी चित चैन लहैना ॥ छूटै न लाज अछूटै न लालच लोककी लीक उलंघ परैना । तातें सकोच सनेह भरे अकुलात खरे जलजात से नैना ॥ १९ ॥ बिल अक्षर ४५ गुरु ३ लघु ४२ ॥

दो० समरससमरसकोचबशबिबशनठिकठहराय ॥
फिरिफिरिउझकतफिरिदुरतदुरिडरिउझकतजाय २०

यह नायिका मध्याहै पूर्ववत् ॥ सवैया ॥ आनन मांझ बसी पिय मूरति नैनन मांझ सकोचवेकौ। झांकि झरोखा दुरै फिर झांकै दुरै बहुरौं ठहरात न एकौ ॥ त्रास इते गुरु लोगन को उत लालच मोहन के लखिबेकौ। लाज औ कामके बीचहु बीच परी यों चलाचल हाल हियेकौ ॥ २० ॥ पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नईलगनिकुलकीसकुचिबिकलभईअकुलाइ ॥
दुहूंओरऐंचीफिरै फिरकीलौं दिनजाइ ॥ २१ ॥

यह नायिका मध्या है परकीया हू कहिये। नई लगनि कुलकी सकुच या पद तें सखी सखीसौं कहति है ॥ अरु नायकहूसों सखीको बचनहै ॥ कवित्त ॥ नई लगी लगन रसिक मनमोहन सों उर अभिलाषनकी उमँग भरतिहै। कुल की सम्हार की सुरति आये थीरीहोत अतिही बिकल जिय कल न धरतिहै ॥ देखिबे कौं डरति डरति मनही मन में भरत उसास पै प्रकाश न करति है। चाह कुल-काने बीच फिर कीलों बालबधू इतउत ऐंची ऐंची फिरिबो करति है ॥ २१ ॥ चल अच्छर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० छलाछबीलेलालको नवलनेहलहिनारि ॥
चाहतचूमतलायउरपहिरतिधरतिउतारि ॥ २२ ॥

यह नायिकाको सनेह नायक में अधिक है सुताके छलाको पतिमिले सो सो सुख मानत है लाजते मिले को भी प्रयास नाहीं करत ॥ नायिका मध्या परकीयाहू होय सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नागरसों नव नेह लग्यो नवनागर आलिनहूंसों दुरावै। देखिबेको उकलात हिये अति लाजनसों बनपै नहीं आवै ॥ नंदलला की छला लहिकै तकि ताहि रही न निमेष लगावै। चूमति छावति आंखिनसों कबहूं पहिरै कबहूं उरलावै ॥ २२ ॥ मराल अच्छर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० चालेकीबातेंचलीं सुनतसखिनकेटोल ॥
गोयेहूलोयनहरतिबिहसतिजातकपोल ॥ २३ ॥

यह नायिका मध्या सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ सोहै सखीन समाज में राधिका जाहि लखे रति रूप लजायो। एकही बैस सबै गुण आगरि चौपरि खेल भलो बनिआयो ॥ चालेकी बात चली तबहीं सुनिकै मुँह

आंचर भीने दुरायो । नैननि लाज कपोलन हांसी दुहूं मिलिकै अति रंग दिखायो ॥ २३ ॥ मदकल अच्चर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० वरउरझ्योचितचारसौंगुरुगुरुजनकीलाज ॥
बटयोहिंडोरेसेहियेकियेबनैगृहकाज ॥ २४ ॥

नायिका मध्या सखीको वचनसखी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ हरि मुख जोवत जरूरन सौं भयभीति नीलकंठ मैन को मरूरनि मरति है । बसनकी बासन की सुधि परिहरी पुनि हरै हरै दीरघ उसासनि भरति है ॥ मुरछित होति पर चितिपै परत नाहीं सरलों सम्हारि फेरि धीरज धरति है । बैठि बहराय रीझि जिय तहराय फिर लाजहि बुलाय गृहकाजहि करति है ॥ २४ ॥ पयोधर अच्चर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० सटपटातसीशशिमुखीमुखघूंघटपटढांकि ॥
पावकझरसिझमाकिकै गईझरोखेझांकि ॥ २५ ॥

यह नायिका मध्या लाज काम दोऊ समान नायक सखीसों जैसी भांति देखी है तैसी अवस्था निवेदन करतहै सखी सखी सौं वचन कहति है॥ कवित्त॥ मोहनीसी मुरली की धुनि सुनि श्रवणनु ललकति आई शशिमुखी सटपटसौं । नैस कब झकिल्यानि अवलोकवे कौं उर दाव लीनो आनन लजाय पटपटसौं । कहैं कवि कृष्ण बाल जानिकौं निकाई देखिवेकूं दृग आकुल मदन कि झरोखा झटपटसौं ॥ २५ ॥ मौढावर्णन ॥ चल अच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० बिहँसिबुलायबिलोकिअति प्रौढ़पयारसघूमि ॥
पुलकिपसीजतिपूतको पियचूम्योमुँहचूमि ॥ २६ ॥

यह प्रौढानायिकाहै सुस्नेह की अधिकाईसे पियनेचूम्यो वही पूतकी मुँहचूमि आनन्द मानत है ॥ सवैया ॥ पूरण प्रेम उमाहतें प्यारी फिरै सब मांझ हिये हुलसाती । पूत को आनन चूम्यो पिया तिय चूमत ताहि महारसमाती ॥ चाहि उतै मुसकाय बुलाय हिये सुखपाय लगावत छाती । गात पसीज रोमांचितहोति भई अनुराग के रंगमें राती ॥ २६ ॥ नर अच्चर ३७ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० कोटियतनकीजैतऊ तनकीतपनिनजाय ॥

जौलौंभीजेंचीरज्यों रहैनप्यौलपटाय ॥ २७ ॥

यह नायिका प्रौढा है कामको अधिक है नायिका को बचन सखी सौं सखी कहति है ॥ कवित्त ॥ किये कोटि यतन न तनकी तपन जाय अतनकीपीर अतिवर सरसाति है। दूरितें बिलोकै चित चौगुनौ उमङ्गै चाव ढिग आये भेंटबे को मति अकुलाति है ॥ लीजिये भुजानि भर कीजिये नन्यारा कहूं जीवन सफल जौलौं यौंहीं बिन रातिहै। आले पट कीसी भांति प्राणपति आठौ याम रहै लपटानो छाती तोही लौं सिराति है ॥ २७ ॥ मराल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६ ॥

दो० छिनकुउघारतछिनछुवत राखतछिनकुछिपाय ॥
सबदिनुपियखंडितअधर दरपनदेखतजाय॥२८॥

यह नायिका प्रौढाहै नायक सौं सनेह अधिक है या नायक रति सुरतिके चिह्न को मन लगावत है सखीको बचन सखी सौं कहति है ॥ कवित्त ॥ रात रति रंग हरि संग मिल कीनो अंग अंग मनमथकी तरंग सरसै। भोर भये बाल सजनी गण मैं बैठिबे निशाकी बातैं सुमिरि सुमिरि जिय तरसै ॥ प्यारेको मदन को अधर पर चिह्न ताहि आरसी लै बार बार देखे रस बरसै। कबहूंक उघारै कबहूंक ढांकि राखै अनुराग मैं उमंग पान पल्लव सौं परसै ॥ २८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० दुखहायनुचरचानहीं आननआननआन ॥
लगीरहतिटूकादिये काननकाननकान ॥ २९ ॥

यह नायिका प्रौढा प्रौढा नायिकाको बचन सखी सौं परकीया हू होय ॥ कवित्त ॥ लाल मिलि भावन सौं मिलिकर आप रसकेलिक मनोरथ बिबिध बिधि मानहीं। कृष्ण प्राणप्यारो मेरी बोर ठरो ताकूं चहरु मेरेई चवाइन को ठानहीं ॥ कुंजबन बीथी मौं या खिरकी किवार द्वार लागी रहै निशि दिन टूका दिये कानहीं। देखा माई इन दुखदाइनके उलटि जुआनन आननप्रति आन चरचा नहीं॥२९॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पहुँचतिझटिरनसुभटलौं रोंकिसकैसबनाहि ॥
लाखनहूंकीभीरमैं आंखवहींचलिजाहि ॥ ३० ॥

यह नायिका प्रौढा है परकीया नायिका की चितवनि देखि सखी सखी सौं

कहति है॥ सवैया॥ मान कियो तिय मानै न कैसेहू आली रही बहु भांति मनाय कै। सोइ गई रिसही जिय में धरि सोय रह्यो ढिग मोहन आयकै॥ रोसहूं में सरसायो रहै कहतै न बनै जु रही छबि छायकै। इंदुमुखी सुपने कै सुभाय रही पियके हिय सों लपटाय कै॥ ३०॥ करभ अच्छर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० अपनीगरजनबोलियत कहानिहोरोतोहि॥

तूप्यारोमोजीयको मोजियप्यारोमोहि॥ ३१॥

यह नायिका मौढा है सो नायकसों अपने जीव की व्यवस्था कहति है कि तेरे बिना देखे मेरी जीव रहत नाहीं यातें अपनोउ राखिबेको तोसों बोलतहूं नायिका को बचन नायक सों॥ कवित्त॥ अपने अपने प्राण सबही को प्यारे होत जात भांति राखिबो सबहि चहियतु है। ऐसी कछू बानि आनि परी मेरे प्राणन कूं तोहिं देखों जौलौं तौलौं चैन लहियतु है॥ करत उपाव हौं तौ तिनहींके राखिबे को कृष्ण प्राणप्यारे कित न्यारे रहियतु है। तातें लाल बोलियत आपनीयें गरज न ताको कछु तुम सों निहोरो कहियतुहै॥३१॥ नर अच्छर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० जातसयानअयानह्वै वैठगकाहिठगैन॥

कोललचायनलालके लखिललचौंहैंनैन॥ ३२॥

यह नायिका मौढा है॥ सखी शिक्षा देति है ताको उत्तर कहतहैं कि वे नेत्र देखिकै को तू ललचात नाहीं स्नेह को आधिक्य नायिका को बचन सखी सों॥ सवैया॥ को न रहै ठग मूरसी खाय के भूलत कौन बिबेक कलैं। काहि न वे बिसरावें सबै सुधि मोहन वे कहिका अबलैं॥ होत सयान अयान सबै चतुराय अनेक न एक चलैं। आलीरी मोहनलाल के लोल बिलोचन देखत कौन छलैं॥ ३२॥ नर अच्छर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० इहिकांटेमोपाय नहिं लीनी मरतजिवाय॥

प्रीतिजनावतभीतसे मीतजुकाढ्योआय॥ ३३॥

सवैया॥ जा दिन तें मिलि मैनकी मूरसी डारि गयो वह छैल सुहायो। तादिन ते अकुलात हैं लोचन देखिबे को कछू दावँ न पायो॥ मो पग में मग में लगिकै इह कांटे ने आज अमी बरसायो। प्रेम जनावत पै भयभीत सों मोहन मीत जु काढन आयो॥ ३३॥ नर अच्छर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० कीनेऊंकोटिकयतन अबकहिकाढ़ैकौन ॥
भौमनमोहनरूपमिलि पानीमेंकोलौंन ॥ ३४ ॥

यह नायिका परकीया नवोढ़ा ॥ अपने मन की आसक्ति सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ जा दिन से वर बानिक सों निरख्यो बलबीर कलिंदी के तीर में । तादिन तें न सुहात कछू सुधि को लवलेश रह्यो न शरीर में ॥ नैनन मांझ बसी यह मूरति जाय पर्यो मन तो छबि भीर में । कोटि उपाय किये कढ़े कैसे विलाय गयो सखी लौंन ज्यों नीर में ॥ ३४ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ परकीया गुप्ता ॥

दो० केसरकेसरिकुसुमके रहेअंगलपटाय ॥
लगैजानिनखअनखुलीकतबोलतअनखाय॥३५॥

यह नायिका परकीया भूत सुरत गुप्ता ॥ नायिकाको बचन सखी सों जो नायक के प्रत्यक्ष सखी नायिका सों कहै तो खंडिताहू संभवै है ॥ सवैया ॥ तोहिं तो बान परी अनखैबे की ऐसेही क्यों सतराइठ ठानै । कीजिये तो निरधार कछू कियो भौंह चढ़ाय कौं बोल बखानै ॥ केसर सों उबट्यो तनु सों कहु केसर ह्वैकरहे लपटानै । आवरी तोहिं दिखाऊं नजीक है बावरी तैं वे नख छूतै जानै ॥ ३५ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कारेबरनडरावने कितआवतइहिगेह ॥
कैलालेयोंसखिलखैलागेथरहरदेह ॥ ३६ ॥

यह नायिका परकीया हेतु गुप्ता नायक कों देखि सात्त्विक भये हैं ॥ तिनकों सखी सों दुरायबे कों कहति है ॥ कवित्त ॥ आपु कारे रंग रंगे छिरमि की छरा धरैं ओढिबे कों कारी एक कामरि याही बिसाति । शीश पर फेंटा एक पीरो सो अमेठि बाँध्यो तापै एक बिरही की परवीया फहराति ॥ मटक चलत डर पावनो सो स्वांगु किये जब जब यहि ओर आवत अहीर जाति । तब तब देखि सखी कोऊ बेर देख्यो याहि देखैं डरलागैं देह पुलकि थरहराति ॥ ३६ ॥ परकीया वाग्विदग्धा शार्दूल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० रह्योमोहुमिलनौरह्योयोंकहिगहैमरोर ॥
उतदैअलिहिउराहनोइतचितईमोओर ॥ ३७ ॥

नायिका परकीया वाग्विदग्धा जुक्रय करि गई है सुनायकको सखी सों सखी

कहति है ॥ सवैया ॥ ता दिनकी वह बालि गलीमें मिलीहुती कालिह गई चित-चोरि कै । एकहि ठौरकरी इकठौरी मनो बिधि रूप की राशि बटोरि कै ॥ छां-ड्यो मया करिबो मिलिबोउ परोसनी सों कह्यो भौंह मिरोरि कै । यों सजनी सों उराहनो दै परिमोतन हेरिगई मुह मोरिकै ॥ ३७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० करिमूंदरकीआरसी प्रतिबिंब्योप्योआय ॥
पीठदियोनिधरकलखैइकटकडीठलगाय ॥ ३८ ॥
पौषमाससुनिसखिनपैसांईचलतसवार ॥
लैकरबीनप्रबीनतियगायोरागमलार ॥ ३९ ॥

नायिका क्रियाबिदग्धा मुख्य तौ परकीया को भेद है स्वकीयाहू होय तौ होय ॥ सखी को बचन सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ शीत समय परदेश को पीय पयान सुन्यो वह रोवन लागी । या ऋतु मैं हर क्यों हूं रहै घर देवता पूज मनावन लागी ॥ और उपाय तवयों न कछू तब साजिकै बीन बजावन लागी। प्यारी प्रवीण भरे स्वरमेघ मलार अलापिकै गावन लागी॥ ३९॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० मंजनकरिखंजननयन बैठीब्यौरतबार ॥
कचअँगुरीबिचदीठदैचितवतनन्दकुमार ॥ ४० ॥

यह नायिका क्रियाबिदग्धा जात वर्णन होत हैं सखीको बचन सखी सों ॥ सवैया ॥ मंजुमुखी करि मंजन चंदन चौकी पै बैठी सनेह सँवारति । पंकज पां-खुरी सी अंगुरीन सों ब्यौरत बार हिये रसिपारति ॥ कुंतल औ कर पल्लव रंध्रनि बीच तैं दीठ इतौ तन टारति। सुन्दर श्रीनँदनन्दन को मुख खंजन नैन निशंक निहारति ॥ ४० ॥ बगज अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० न्हाइपहिरिपटुझटकियोबेंदीमिसिपरनाम ॥
दृगचलायघरकोचलतबिदाकियेघनश्याम ॥४१॥

यह नायिका परकीया बिदग्धा सखी को बचन सखी सों ॥ कबित्त ॥ न्हाय पटु पहरि मृग मद्धी चारु चातुरी सों झटि मन भावन को मुदि मुसकानी है। कृष्ण कहैं बेंदी के सुधारिबे कों मिस करि कीनो प्राणपति अहि हित सुखसानी है ॥ कहा कहौं आली कछु कहत बनै न क्योंहूं जैसी वह सरस नेही रीति ठानी

है । परको चलतु चारु लोचन चलाचलकैं चातुरी सौं चाहि बिदा कीनौं दधिदानीहै ॥ ४१ ॥ ललिता मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० पूछेक्योंरूखीपरति सगिबगिरहीसनेह ॥
मनमोहनछबिपरगटीकहैकव्यानीदेह ॥ ४२ ॥

यह नायिका लक्षिता है रुखाई करके सखी सों दुरावति है पै रोमांच देखि परगट करति है सखी को बचन नायिका सों कहति है ॥ सवैया ॥ पूछत क्यों बहरावत बात कहां तैं अनोखी रुखाई तैं ठानी । प्यारे के प्रेम पै पागिरही अब होत कहा मुकरे हम जानी ॥ क्यों बर अन्तर को दुरै प्रीति सनेह की रीति रहै नहीं छानी । तू मनमोहन की छबिपै झुकटी झुकहै यह देह कटघानी ॥४२॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० औरेओपकनीनिकनिगनीघनीशिरताज ॥
मनीधनीकेनेहकीबनीछनीपटलाज ॥ ४३ ॥

यह नायिका लक्षिता सखी को बचन नायिका सों नायक को सनेह यासों अधिक है सो नेत्रन की शोभा और भई है या भेद ते प्रेमगर्विता होय ॥ सवैया ॥ केलि किलोलके रंग में सुन्दरि प्रीतम संग रमी रजनीहै । नेह सनी दरसाति भटू अरसाति प्रभा सरसाति घनीहै ॥ औरइसो भयगंति श्रोप अनन्तनिकी शिरमौर गनी है । कान्हके प्रेमकी सौंहैं मनी पटलाज में चारु छनी सी बनीहै ॥ ४३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० प्रेमअडोलैंडुलैनहिंमुँहबोलैअनखाय ॥
चितवनकीमूरतिबसीचितवनमाहिंलखाय ॥४४॥

यह नायिका परकीया स्नेह लक्षिताहै सखी को बचन नायिकासोंहै॥ सवैया॥ बोले तू क्यों न कितो अनखाय कहौ तु कहा अब साधै रुखाई । तेरे हिये थिर प्रेमकी बानि सुजानि परीरि दुरै न दुराई ॥ तू हरिके हिय मांझि रहीखुभि तेरोई नाम रटै सुखदाई । प्यारेकी मूरति तो चित मांझ बसी सुचितौन में देत दिखाई ४४ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० रुखरूखीमिसरोखमुखकहतरुखौंहैबैन ॥
रूखेकैसेहोतये नेहचीकनेनैन ॥ ४५ ॥

यह नायिका लक्षिता है परकीया रुखाई करि सखी सौं दुरावतिहै पै प्रीति के नेत्र देखि सखी नायिका सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ भृकुटी मरोर मुंह मोर रोसमिस करि ऊपर रुखाईसाधिकहे रूखेबैन है । आलिन जो यहै पन प्रीतही को धरे तन फैसेजुदुरावों कछु इनसों दुरैनहै ॥ हरिके सनेह सानि कैसे धौं रहति छानि कहै देत प्रकटछबीली छबिऐनहै । रूखोरुखकरि रूखीबानिठानिबैठी परिरूखे कैसे होत नेहचीकने ये नैनहै ॥ ४५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० वहकेसबजियकीकहति ठौरकुठौरलखैन ॥
छिनऔरैछिनऔरसे येछबिछाकेनैन ॥ ४६ ॥

यह नायिका लक्षिता सखी नायिका सों कहति है । जो नायक सों कहै तौ थिरताहूहोय ॥ सवैया ॥ देखत नाहिं नै ठौर कुठौर रहैं जितही तित चाह चकेहैं । और घरी पल औरही दीसत झूमत आरस मैं बिथके हैं ॥ लाज तजैं शिथिलाई गहैं अपने बश नाहिं नयों बहके हैं । देत कहे जियकी सबबात विलोचन ये छबिछाकछके हैं ॥ ४६ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० नांवसुनतहीह्वैगयोतनऔरैमनऔर ॥
दबैनहींचितचढ़िरह्योअबैचढ़ोहैत्यौर ॥ ४७ ॥

यह नायिका सखीसों रिसके मिस करिके स्नेह दुरावतिहै । ये नांव सुनेतें चित्तकी रीति अरु क्रिया औरही भांति भई यातैं सखीने नीकैकरिजानी । नायिका लक्षिता सखीको बचन नायक सों ॥ सवैया ॥ नांव सुनेही भयोमन औरही औरै भयो तनु चेतन नेरैं । नेहकी रीति यहै नवनागरि नेकलगैनिबरैन्त निबेरैं ॥ क्यों हमते सतराय बिलोकति होत कहा अब त्योरीतरेरैं । ऐसे किये कहि कैसे दुरेहरि प्यारेको प्रेम चढ्यो चित तेरैं ॥ ४७ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० रहिमुंहफेरकिहेरइतहितसमुहौंचितनारि ॥
डीठिपरसउठिपीठिकेपुलकेकहैंपुकारि ॥ ४८ ॥

यह नायिका परकीया है सखी देखत पीठिदै बैठी दुरायबे कौं रोमांच पीठपै भये ते देखि सखी कहति नायिका लक्षिता ॥ कबित्त ॥ हितकों निरखियतु हरपैं हितूको मनु हमतो धरथोई तनु प्रेमकी प्रतीति को । तिन्हैं तू मुरावति है बात बहरावति है काहे को दुरावत नवेली नेह नीति को ॥ भावै इत हेर भावै रहि मुंह फेरि तेरे चित सनमुख दीसतिसे रस रीति को । डीठिके परसहोते उठी

यह पीठि पै पुलकि पति प्रकट करत तेरी प्रीतिको ॥ ४८ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० लखिलोनेलोइननुके कोपनुहोयनआजु ॥
कौनगरीबनिवाजिबोकितुतूठ्योऋतुराजु ॥४९॥

यह नायिका कुटिला कौन गरीबनिवाजिबो या पदतें बहुत नायकनुकी प्रतीति भई । सखी को वचन नायिकासों जो नायिका की सखी नायक सों कहत हू बनै ॥ सवैया ॥ सरसीरुह खंजन मीन कुरंग प्रभा इनकी सहजै हरिबो । इतने पर चाहके चापनुसों चहुँओरचलाचल ही करिबो ॥ चितचोरतिनाथ सनाथ भयो बहको सुकृती जिह पै ढरिबो । इन सुन्दरलोचन कोरनिसों लखि कौनपै आजु प्रभा करिबो ॥ ४९ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फिरफिरदौरतदेखियै निचलेनैकरहैन ॥
थेकजरारेहौनपरिकरतकजाकीनैन ॥ ५० ॥

यह नायिका परकीया कुलटा कौनपैकरत कजाकी इतैं बहु नायकन सों प्रीति जानी सखी को वचन नायिका सों ॥ कवित्त ॥ कानन के निकट निशंक है बिहार करें काहू ते न डरैं चितवतु हरि लैत ये । नृपति मनोज के प्रबल असिवाहक हैं घायल करत बर भरम धुरैन ये ॥ घूंघट की ओट गहैं घाट हेरि फेरि फेरि दौरतही देखियत निचले रहैन ये । चंचल ढरारे अनियारे रतनारे कारे कौन पर करत कजाकी तेरे नैन ये १ ॥ कवित्त ॥ यथा ॥ कजरा कव चहिये वरुनी केशरलिये भौंहैं धनु किये जैतवार जंग पेन हैं । इनकी कजाकी आगे कजाकी कछू न चलै बहु मलैं हाथ येतौ बाहू दुख देन हैं ॥ बाकी सूधी चितवनि दोऊ तरवारिं बांधें करैं आधे आधे कहूं मारत डरैं न हैं । कहैं ऊधोराम सजे बने रहैं आठोयाम मैन बादशाही के सिपाही दोऊ नैन हैं ॥ ५० ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० खेलनासिखयेअलिभलेचतुरअहेरीमार ॥
काननचारीनैनमृगनागरनरनुशिकार ॥ ५१ ॥

यह नायिका परकीया कुलटा सखी को बचन नायिका सों है । नागर नरनु शिकार या पदतैं बहुत नायकन की प्रतीति भई ॥ सवैया ॥ कानन चारी कहावैं इते पर दौर करैं पुरमें मृगया ये । ओट अभेदी अचूक हनैं मुनि आगर नागर

मारि गिराये ॥ घायल कौं फिरि लेत सुध्यौ न पलो न थकै अतिकौतुक छाये । नीके मनोज मवीन करो लये खेलनि नैनकुरंग सिखाये ॥ ५१ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २२ ॥

दो० चलतुदेतआभारसुनि वहीपरोसहिनाहिं ॥
लसीतमाशे कीदृगनिहांसीआंसुनमाहिं ॥ ५२ ॥

यह नायिका परकीया मुदिता है चाह यती बात भई जानि प्रसन्नता की हांसी भई सखीको वचन सखीसों ॥ सवैया ॥ देखि परोसीकी चीकनी चाहिनि प्यारी हिये परप्रेमकी फांसी । त्योंपिय जातबिदेश लख्यो बिलखी बिरहातुर सास-वसांसी ॥ वाही परोसीसों बोलिकही पतिहैं इत तोसों हमारी निसांसी । त्यों लसी अंबुज नैनीके नैनन आंसुन मांझ तमाशेकी हांसी ॥ ५२ ॥ अनुशयना मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० सनसूख्यौबीत्यौबनौ ईखौलईउखारि ॥
अरीहरीअरहरअजौंधरिधरहरिजियनारि॥५३॥

यह नायिका अनुशयना सङ्केत की ठौरजाति जानि शोच करतिहै सो सखी समाधान करत है प्रत्युत्तर ॥ सवैया ॥ बीननफूल सहेली के संग चली मृगलो-चनि मोद भरी हैं । कीथल जीवजरी अवलोकि बसासभरी अलि सौचरी हैं ॥ बीत गये बन सूख्यो सनौं अरु ऊखौं उखारी लई सगरी हैं । यों हहरो मतिधीर धरो अवहीं तौ अराहर प्यारी हरी हैं ॥ ५३ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० फिरफिरबिलखीहैलखतिफिरफिरलेतउसास ॥
साँईशिरकचश्वेतज्यौंबीत्यौचुनतिकपास॥५४॥

यह नायिका अनुशयना सहेट की ठौर बीती जानि बिलखति है सो सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ बालम के शिरके सरोरुह ज्यों सेत ऐसे लेत चुनि चुनि शिर धुनि मुरझाति है । बीरनिहै तूल ऐसे पै शूल में सलत हिये मानि दुख मूलफूल जिमि कुम्हिलाति है ॥ बारबार कहत अली सों कैसी भली रति केलके बिलासथल लोयों चलि जाति है । बिलखि बिलखि के उसासैं लेत बालवधू लखिबन बीत्यो मन अति अकुलाति है ॥ ५४ ॥ नायिका अनुकूला पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नहिंहरिलौंहियराधरौनहिंहरलौंअरधंग ॥
एकतहीकरराखिये अंगअंगप्रतिअंग ॥ ५५ ॥

यह नायिका अनुकूलाहै सुनायक के मनको विचार जानिये ॥ सवैया ॥ जो अबके मिलिपैतो रहो मलिको भरै बादि बियोग बृथाहीं । न्यारी न कीजिये ताहि कहूं पलु लीजै छिपाय मिलै छतियांहीं ॥ बारही बार बिचारतहूं चित और कछू जिय आवत नाहीं । राखियेकै हरलौं अरधंग कि राखिये लै हरिलौं हियमाहीं ॥ ५५ ॥ कच्छअक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० गोपिनसँगनिशिशरदकीरमतरसिकरसरास ॥
लहाछेहअतिगतिनुकीसबनुलखेसबपास ॥ ५६ ॥

यह नायिका कुदक्षिणा है सुरास मंडल में अपनी चतुराई करिकै सबको प्रसन्न राखि एकके आधीन काहू नैन जान्यो सखी को बचन सखीसों ॥ कबित्त ॥ यमुनाकी पुलनि सुहाई छबिछाई तैसी शरद रैनि जोन्ह बिशद बिलास हैं। गोपिका निसंग रसरंगकी उमंग रमैं रसिकमनमोहनु रमत रसरास हैं ॥ अबला अनेकन में कीन्हीं नंदलाल कछू अद्भुत चातुरी की कला यों प्रकास हैं । सबही की बांह गहि सबही के संग नाच्यौ सबनु बिलोक्यौ कान्ह सबही के पास हैं ॥ ५६ ॥ नंरअक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बेईगड़िगाड़ेंपरी उबट्योहारहियैन ॥
आन्योमोरिमतंगमनु मारगुरेरनमैन ॥ ५७ ॥

यह नायक शठ है । बिनु गुनहार के चिह्न मीठी बात कहि दुरावत है नायक को बचन नायिका सों कहै तो खंडिताहू होय ॥ कबित्त ॥ आज मनमोहन मया कैसेरे आये लालन सोहतु सिंगारुचारु मेरेमन मान्यो है । आलिस बलित दृगघूमत ललित गति शिथिल कलितरूप मोहनी सो मान्यो है ॥ कृष्ण प्राणप्यारे उरमें उबट रह्यो यहै बिन गुनहार प्रगट जात जान्यो है । वेई गड़िगाड़ें परी सुमन मतंग मानौ मदन गुरेरन तैं मारिमोर आन्यो है ॥ ५७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० बालकाहिलालीभई लोयनकीयनुमांह ॥
लालतिहारेदृगनकी परीदृगनमैंछांह ॥ ५८ ॥

यह प्रत्युत्तर नायक शठ नायिका खंडिता ॥ सवैया ॥ चारु निकाई लखैं जिन

की रद लागत औ परती पलकी है। प्राणपियारी कहा इन नैननु आजु ललाई
इती ललकी है ॥ लोचनलाल विहारे लखैं तिनकी इतआनि प्रभा झलकी है॥
५८ यथा सवैया ॥ रुचि पंकज चंदन वंदन कंचन रंचन रोचनहूं को यची। क-
हिये केहि कारण कोपते लायक कापर भामिनि भौंह नची॥ बन मानतही अँ-
खियां लखिलाल ये नाहिंतै रतिके रोखरची। तन तेरे वियोग तच्यौ तरुणी
तिन मानहु मोहिय मांहितची॥ ५८॥ पयोधर अक्षर३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सकतनतुवतातेबचन मोरसकोरसखोय॥
खिनखिनऔटैखीरत्यों खरोसवादिलहोय॥५९॥

यह नायक शठ सापराध आयो है॥ नायिका क्रोध तैं कटु बचन कहति है।
ताको मीठी बातकहि कोप निवारण करत है नायिका अधीरा जानिये। नायक
को बचन नायिकासों॥ कवित्त॥ मोते तो कछुन अपराध परचो प्राणप्यारी मा-
नकर रही यौंहीं काहे को अरसतैं। लोचन चकोर मेरे होत हैं शीतल तेरे तरुण
उदित मुख चंदके दरसतैं॥ कहैं मतिराम उठ लागि कंठ मेरे कत करति कठोर
मनु आनंद बरस तैं। कोपे तैं कटुक बोल बोलति है तऊ मोकों मीठे होत अधर
सुधारस सरसतैं॥ ५९॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० मारोमनुहारनभरी गारयोखरीमिठाहि॥
वाकोअतिअनुखाहटौ मुसकाहटबिनुनाहि॥६०॥

यह नायिका धृष्ट है नायक का बचन सखी सों है याते गुण कथन में नीके सं-
भवतु है। वाको यापदतैं परोक्ष की प्रतीतिभई॥ सवैया॥ मारे तौ फूलन की
छटिका सों तऊ मनुहार अनेक जतावै। गारि जो देय कहा कहिये मधुराई इतेक
सुधाकित पावै॥ वारति मूरति को सतराहटु में रहिये अतिमोद बढावै। शील
सुभाय सुहागल को रसहू रिसहू हसिहीं हसि आवै॥ ६०॥ नर अक्षर ३३
गुरु १५ लघु १८॥

दो० लरिकालेबेकेमिसनु लंगरमोढिगआय॥
गयोअचानकआंगुरी छातीछैलछुवाय॥६१॥

यह नायक धृष्ट नायक की कर्तव्यता नायिका सखी सों कहति है॥ सवैया॥
गोरस के मिस रोक रहैं वन गैल न छांड़त छैल चवाई। भौनभरे मैं कहाकहौं

जैसी करी यशुदाके छला लिगराई ॥ मोढिग आय हरेंईहरें कछू कीनी सनेह सनी चतुराई । छोहरौलेनेकें उठिलागि अचानक आंगुरी छाती छुवाई ६१ यथा ॥ सवैया ॥ खेलत में बृषभानु सुता कहूं धायधसी बनकुंजन मेंहै ।डारसों हारतहां उरझ्यो सुरझाय रही कबिदेव सखी है ॥ तौलगि आय कहूं उततें सुन- जीक परचो चितवीच परचो है । छोहर बाहर बाहरवायदै छेरिदयेछलसों छति- यां छ्वै ॥ ६१ ॥ चल अच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६ । यत बय यति ॥

दो० कुञ्जभवनतजिभवनकोंचलियेनंदकिशोर ॥
फूलतकलीगुलाबकीचटकाहटचहुँओर ॥ ६२ ॥

यह नायिका स्वकीयाहू होय नायिका को बचन नायकसों ॥ कबित्त ॥ मुकलित कली जलजात की कछूक भई भौरनकी गुञ्ज मंजु श्रवणन धारिये । पुलित गुलाब कलिकान की सुगन्ध पौन चिवका शबद मृदु मोदवर धारिये ॥ कलि धुनि करत अनिंद खग बृंदनि अनंतछबि लसत बिहारीयों बिहारिये । आगम बिभास को बिलोकिये छबीलेलाल सुन्दर निकुञ्जतजि सदनुसिधारिये ॥६२॥ नर अच्चर ३३ गुरु १५ लघु १८ अथ रूपनिवेदन नायिका को नायिका सों ॥

दो० रहीलटूह्वैलालहौं लखिवहबालअनूप ॥
कितौमिठासदयोदई इतेसलोनेरूप ॥ ६३ ॥

यह नायिका को रूप सखी नायिका सों निवेदन करत है सलोनेरूप में मिठास यह अद्भुत है ॥ कबित्त ॥ जैसी जहां चाहियत तैसी तहां बनी विधिहूं पै धुनि आखर के न्याय बनिआईहै । सुखद सुहाई कापै बरनि बताई जाति रतिहूंने जाकी तिलु समता न पाई है ॥ बालछबि छाय तामें और अधिकाई दई दई यालुनाई मांझ कितनी मिठाई है । सुन्दर कन्हाई हो तौ निरखि बिकाई वह रूपकी निकाई मानो देहधरिआई है॥६३॥ नर अच्चर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥ यह नायिका को रूप निवेदन नायक सों ॥

दो० मोहिंभरोसोरीझिहैं उझकिझांकिइकबार ॥
रूपरिझावनहारवह यहनैनारिझवार ॥ ६४ ॥

यह नायका को रूप सखी नायिका सों निवेदन करतुहै सखी को प्रयोजन प्रीति करायबो ॥ सवैया ॥ सुन्दर जो कहिये तौ तिहूं पुर में इक नंद दुलारोइहै ।

यामैं कहा कहनावति है कछू प्रेमको पंथ निरारोइ है ॥ नेक झरोखा ह्वै झांकी बुलायल्यौं मोहिंभरोसो तिहारोइ है। रिझवार हैंतो दृग रीझैंइंगे वह रूप रिझावन हारोइहै ॥ ६४ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २० ॥ गात बर्णनम् ॥

दो० हीरीझीलखिरीझिहो छबिहिछबीलेलाल ॥
सौंनजुहीसीहोतद्युति मिलतिमालतीमाल॥६५॥

यह गात बर्णन नायिकाके अंगकी छबि नायक सों निवेदन करतिहै॥ सवैया ॥ नीकी लसैं बृषभानुलली नवयौवन ज्योति जगी अँगअंगहि । ताहि बिलोकिलला मन मेरो भोइरह्यो अति रीझ तरङ्गहि ॥ छैलछबीले लखैं छबि रीझिहौं क्यों न हिये रसभाव उमंगहि । मालतीमाल तनूद्युति सों मिलि सौंन जुही के प्रकाश तरंगहि ६५ ॥ यथा सवैया ॥ चौसर चारुचमेलीके फूलनिको सखियानि सँवारिकै आन्यो । सो पहिरयो गुन गौरि धुरंधर कंचन से तन में मन मान्यो ॥ ह्वैगई सौंनजुही कीसी माल सुअंगकेरंगमें भेद न जान्यो । दंतनकी द्युतिसों मुसिकायकै फेर चंबेलिही को ठहरान्यो ॥ ६५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंगअनंगनजगमगति दीपशिखासीदेह ॥
दियाबड़ायेहूं रहै बड़ोउजारो गेह ॥ ६६ ॥

यह नायिका की छबि देहकी दीपति सखी नायक सों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ दीपकीसी लोय ऐसी दूसरी न कोई रही दृगनि समोय मानो मोहनी लसतिहै । जटित जवाहरके भूषण ललित अंगअंगनि मिलत जगाज्योतिसी जगति है ॥ दीपक बड़ोहूभये देहके उजासहोत बड़ोई प्रकाशक चौंधिसी लगतिहै । दीपतिकी द्युति भरि भवन अखिल जाल रंध्रनि ह्वै बाहिर की ओर बहलति है ॥ ६६ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वाहिलखैलोयनुलगै कौनयुवतिकी जोति ॥
जाकेतनकी छांहढिग जोन्हछांहसीहोति ॥६७॥

यह नायिका की दीप्ति सखी नायक सों करति है जो नायक सखी सों कहै तौ गुणकथन हूं संभवतु है ॥ कबित्त ॥ यौबनकी जोति जगैं तनकी बनक की नी हीरनकनक छबि महल बिलम्ब की । ललित बिलास कोटि मंद मृदुहास मतिराम अंग बासु मृगमद बासु मंदकी ॥ मदके मदनबन मद नैन मन्दिर से

गति गरबीली मद मौकल गयंदकी। अधिक अँध्यारी में उजारी होत चन्द की त्यौं चन्दकी उजारी में उजारी मुखचन्दकी ॥ ६७ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० भईजुतनछबिबसनमिलि बरनसकैसुनिबैन ॥
अंगओपआंगीदुरी आंगीअंगदुरैन ॥ ६८ ॥

यहं नायिकाकी शोभा सखी नायकसों निवेदन करतिहै ॥ सवैया ॥ हरि कंचन बेलीसी बालकी देहकी दीपति को बरणै कविहै। अरु ताहि मिली द्युति कंचुकी की अनूपम ओप रही फबिहै ॥ कछु जात कही नहिं अंगप्रभा अरु चीर मिलै जुभई छबि है। वह आंगी गई दबि अंगकी ओप में आंगी में अंग कहा दबि है॥६८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० देखीसौनजुहीफिरति सौनजुहीसेअंग ॥
द्युतिलपटनुपटसेतहूं करतबनोटीरंग ॥ ६९ ॥

यह नायिकाके अंगकी गुराई सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कवित्त ॥ सहज सिंगार द्युति लसति अपारलखि मुनिहूंके मन भाव उपजै अनंगको। अति सुकुमार यातैं लचकत लांकुमार सहि न सकत बिबि उरज उतंगको॥रूपकी रसाल तुमदेखी सो न बाल लाल कहाकहौं बनक बरन वाके अंगको। चारु तन सुख पट पहिरत नख वाहि तन द्युति मिलि होतु केसरिया रंगको ॥ ६९ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० दीठिनपरतुसमानद्युति कनकुकनकसेगात ॥
भूषणकरकरसकलगत परसपिछानेजात ॥७०॥

यह नायिकाके अंगकी दीप्ति सखी नायिकासौं कहति है। नायकहू सखी सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ ओप अनूपम आननकी अरु अंबुज नैननु अंजनु आनै। देखतही मनहीं मनसों चित आजु कहा जनु भूषण ठानै ॥ ऐसे में आय गयो रिझवार सुडीठपरे तब घूंघटतानै। भूषण जानि परै न सखी ब्रजभूषण देखत भूषणजानै ॥ ७० ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० करतुमलिनआछीछबहि हरतजुसहजबिकासु ॥
अंगरागुअंगनलगो ज्योंआरसीबसासु ॥ ७१ ॥

यह नायिकाके अंगमें केसर लगीहै नायकको इतनोहूं अंतराय सुहातु नाहीं यह जानि सखी नायक सों कहति है जो नायक नायिकासों कहै तो रूपगर्विता होय ॥ सवैया ॥ मैनकी मोहनीसी लखि न्यायही मोहन रीझरहे रसपागैं । यौवनरूप सुहागसनी लखि सौतिनके उर दाहनि दागैं ॥ ऊजरो लागै न और कछू नवनागरि तेरी गुराईके आगैं । केसर लागेते अंग लखात ज्यों आरसि देखें बसासकेलागैं ॥ ७१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० पहिरनभूषणकनकके कहिआवतयहिहेत ॥
दरपनकेसेमोरचे देहदिखाईदेत ॥ ७२ ॥

यह सखी नायिकाके अंगकी निकाई कहतहै जो भूषणहू को अंतराय जानि नायिकासों कहै तो बनत है ॥ कवित्त ॥ हितकी तो बात हितहू सों कहिआवै तिहि ताते तोसों कहत छबीली प्रेमपागिकै। तेरी समताको रति रम्भा उरवशी है न तेरे अनुराग प्यारो रह्यो अनुरागिकै ॥ लौनौ तेरो तन तामें सोने के गहने तूलोपहिरति इन्हैं अबहीं दे त्यागिकै । नीके नीके तनपर फीके फीके लागत हैं मोरचा रहै हैं मानों मुकुर में लागिकै॥७२॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३॥

दो० कंचनतनधनबरनबर रह्योरंगमिलिरंग ॥
जानीजातसुबाससही केसरलाईअंग ॥७३ ॥

यह नायिकाके अंगकी गुराई सखी नायिकासों कहतिहै अथवा लेचलिबेकी उतावलकरि अंगरागको ।निवारण करतु है अंतराय जानि नायकनायिकासों कहतुहै ॥ सवैया ॥ जो कछु तो तनमें तरुणी सुरतीन लहै रतिरूप निकाई । तापर यौवन जोतिजगै कवि को बरनै छविकी सरसाई॥रंगमें रंग समोयगयो जब कंचनसे तनमें घसिलाई। अंगसुगंधनिकी न लहै सरकेसर बासुहीते लखिपाई॥७३॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० छकपूरमनमेंरही मिलितनद्युतिमुकतालि ॥
छिनछिनखरीबिचच्छनौंलहतिछायतिनुआलि॥७४॥

यह अंगदीप्ति की निकाई सखी नायक सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कुंदन से गात जलजात से नयन जाकी दीपति जुन्हाई सो भवन मांझ वैरही । कंचन की चौकी पर बैठि बरबाल साजैं सकल सिंगार ज्योति जगमग है रही ॥ मोतिन की माल सजनी तैं पहराई सुनो ततु द्युतिमिलित कपूरकीसी है रही ।

एक अली चतुर जकीसी चकिरही एक करिवे को निहचे तिनूकी हाथलेरही ॥ ७४ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० केसरिकैसरिक्योंसकैं चंपककितकिअनूप ॥
गातरूपलखिजातदुरि जातरूपकोरूप ॥ ७५ ॥

यह नायिकाके अंगकी दीप्ति सखी नायकसों निवेदन करति है ॥ कबित्त ॥ चंपकचमकचारु कुंदन में कहा ओजु केसरी कुसुमको जु सेंधकरै गातकी । कोकिलाकी कूकहूते पांव पियूखहूते मधुरमयूखहूते मधुराई बातकी ॥ मैनकाहूं मैनछबि मैनद्युति रही दबि मैन गिरिधर ऐसी नैन बनितातकी । देखि दृग भास मृगजात पङ्कितात मन जलजात लजिजात जलिजात जातकी ॥७५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

दो० बरनबाससुकुमारता सबबिधिरहीसमाय ॥
पखुरीलगीगुलाबकी गातनजानीजाय ॥ ७६ ॥

यह नायिकाकी सहज सुगन्ध यौवनकी अरुणाई सुकुमारता सखी नायकसों निवेदन करति हैं जो नायक के सेजकी पाखुरी जानि सखी नायिका सों कहै तो लज्जिता होय ॥ सवैया ॥ बीनतिफूल भरे बर फूल प्रभातसमै सुखसेजते जागी । आयो तहां मनमोहन प्यारो प्रभालखि रीझिरह्यो अनुरागी ॥ वैसोई रंग सुगन्ध है वैसोई वैसीही कोमलता रसपागी । कौनहूं भांति सों जानि परी न गुलाब की पाखुरी गातसों लागी ॥ ७६ ॥ मदकल अक्षर ३५ लघु २२ गुरु १३ ॥

दो० सोहतधोतीसेतमें कनकबरनतनबाल ॥
सारदबारिदबीजुरी भारतकीजातिलाल ॥ ७७ ॥

यह नायिकाकी गुराई सखी कहति है नायकसों ॥ कबित्त ॥ कञ्चनबरन तन बनक अनूप मानों रूप की अवधि मनमथकी रसाल हैं । एक धोती सेतमें अनेक छबिदेती बाल मानों हंसमंडली में चंपक की माल हैं ॥ शरदघटानि मधि दामनी लसतिकिधौं क्षीरसिंधु मांझ बड़वानल की ज्वाल हैं ॥ सुरसरि सोतमें सुधानिधिकी कला किधौं शंकरके अंग लसैं पारबती बालहैं ॥ ७७ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० कहाकुसुमकीकौमुदी कितकआरसीजोति ॥
जाकीउजराईलखे आंखऊजरीहोति ॥ ७८ ॥

यह नायिका की उजराई सखी नायकसों कहति है नायकहू कहै तो संभवहै॥ कवित्त ॥ देखी सुनी होत कहूं रेसम रसम कोऊ करा कैसी यो कमाई मृदु मूजरी। इंदुहोहु वदित न कहाहोहु बदितकहाऊ ऊजरीपैन पून्योंकीसी पूरण प्रकाशपावै दूजरी ॥ उबटि अन्हाय औ अँगोछनि अंगोछो तन रहोउ अछन अछवाई आछी गूजरी। लाखकरो कोऊ पट तरवाकी पूजति न जाकी उजराई देखे आंख होत ऊजरी ॥ ७८ ॥ मदकल अत्तर ३५ गुरु १२ लघु २२ ॥

दो० रंचकलखिपतिपहरियों कंचनसेतनबाल॥
कुम्हिलानीजानीपरति उरचंपेकीमाल ॥ ७९ ॥

यह नायिका के अंगकी गुराई ऐसी है जु चंपेकी माला जानि नाहीं जाति सो सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ लाई बनाय प्रवीन अली नवचम्पक माल सुगन्ध भरीहै। लै अपने करमें नवनागरि कृष्ण कहैं उरमें पहरी है॥ कंचन से तनकी छबि मांझ गई मिलि रंच नहीं उघरी है। चाहिरही सजनी चकसी कुम्हिलायगई तब जानिपरी है ॥ ७९ ॥ चल अत्तर ३७ गुरु ३२ लघु २६ ॥

दो० सघनकुञ्जघनघनतिमिरु अधिकअँधेरीराति॥
तऊनदुरिहैश्यामयहदीपशिखासीजाति॥ ८० ॥

यह नायिका के अंगको प्रकाश सखी नायकसों कहति है जो संयोग समय गुरु सखी कहै तो शिक्षाहू संभवहै परकीया ॥ सवैया ॥ याके समीप न होउ दुरै लखि लेत वे दूरहीते उपहासी। कीजै कहा अबतो कहि जो विधि या बिधि दीपतिही परकासी ॥ काहू कि आंखिन मूंदनजानि तहाँ बलिजाउँ नहूंजिवदासी। ल्याऊं सके से सुरातिअँधेरी उजेरी जु नागरि दीपशिखासी ॥ ८० ॥ पयोधर अत्तर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० लिखिनबैठिजाकीसखीगहिगहिगरबगरूर॥
भयेनकेतेजगतकेचतुरचितेरेकूर॥ ८१ ॥

यह नायिकाकी निकाई सखी नायकसों कहति है कि बाहि देखे शांतिकभाव होत है याते चितेरे ऊपर क्यों लिखत बनै नाहीं ॥ कबित्त ॥ रूपकी अवधि ऐसी और न बनाई बिधि जाको लिखिबे को लाल देवता मनाइबो। ताकी शोभा लखिबे को बैठति गरब करि आनतही मन होत घूम घननायबो ॥ ऐसी भांति आप आप कूर कहवायगये चतुर चितेरे तिन्हें कहाँलौं गिनायबो। कृष्ण माणु

प्यारे वहिचित्रिनी विचित्र गति काहूपै न बान्यौं वाके चित्रको बनायबो ॥ ८१॥
मरालअच्चर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० अंगअंगछबिकीलपट उपटतिजातअछेह ॥
खरी पातरीहू तऊ लगे भरी सी देह ॥ ८२ ॥

यह नायिका की नाजुकताई अरु दीप्ति सखी नायिकासों कहतिहै ॥ सवैया ॥ कंचनकंन कुरंग कलानिधि कंचुकी शोभा सुभाय रहीसी । ता नवनागरिकी निशि द्यौस रहैं नितनैननि मांझधरीसी ॥ अङ्गनि अङ्ग उमङ्ग अछेह प्रभाकी तरङ्ग सुरङ्ग खरीसी । पातरि वाकी अंगेट तऊ छवि पुंजन लागति देह भरीसी ॥ ८२ ॥
मदकल अच्चर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० अंगअंगप्रतिबिंबपरि दरपनसेंसबगात ॥
दुहरे तिहरे चौहरे भूषण जाने जात ॥ ८३ ॥

यह नायिका के अंगकी उजराई सखी नायकसों कहै है सखी सों नायक कहै अरु नायिका सों कहै सो सब भांति संभवति है अरु नायिका सखीसों कहै तो रूपगर्विताहोय ॥ कवित्त ॥ वदन बिलोकि शशि समता लहै न क्योंहूं लोचन बिलोकि जलजातहू लजात है । नागर नवेली नख शिख लौं निकाई भरी बानक विचित्र लखि लोचन सिरातहै । कृष्ण प्राण प्यारे अति उज्ज्वल लसत वाके मुकुरसेगात महाशोभा सरसातहै । अङ्ग अङ्ग प्रति प्रतिबिम्ब परिकेऊ ठौर एक एक भूषण अनेक जाने जातहै ॥ ८३ ॥ मराल अच्चर ३४गुरु१४ लघु २० ॥

दो० बालछबीली तियनमें बैठी आपुछिपाय ॥
अरगटहीफानूससी परगटहोतलखाय ॥ ८४ ॥

यह नायिका के अङ्गकी दीप्ति सखी नायक सों निवेदन करतिहै नायकहू कहै तो संभव है ॥ कवित्त ॥ चन्दकी कलासी चपलासी तिय सेनापति बालम के वरबीज आनन्द के बोतिहै । जाके आगे कंचन में रंचक न पैये द्युति मानों मन मोती लाल माल आगे पोतिहै ॥ देखी प्रीति गाढ़ी पहिने तन सुख ठाढ़ी जोर यौवन की बाढ़ी छिनछिन औरैहोतिहै । गोरीदेहझीने बसन में झलकत मानों फानुसके अंदर दिपति दीप जोतिहै ॥ ८४ ॥ मदकल अच्चर ३५ गुरु१३ लघु२२ ॥

दो० मानहुँबिधितनअच्छछबि स्वच्छराखिबेकाज ॥

दृग पग पोछन को किये भूषण पायंदाज॥८५॥

यह नायिका के तन की छवि सखी नायकसों कहति है। अरु सखी को वचन नायिका सों होतहै॥ कवित्त॥ तूही तीनों लोककी लुनाई लूटल्याई देखें रूपकी निकाई नन्दलाल ललचाये हैं। तेरी द्युति आगे आली कंचनके गहने ये फीके २ लगें ऐसे गात छविछाये हैं॥ दीठिके परसहीते मैलेहोत अङ्ग ऐसी उज्ज्वलता सहित बिरंचिने बनाये हैं। तिनकी निकाई स्वच्छ राखिबे के हेतु ये तो दृगनको मानों पग पोछना बिछाये हैं॥८५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० लीनैऊंसाहससहस कीने यतन हजार॥
लोयनलोयनुसिंधुतन पैरिनपावतपार॥ ८६॥

यह नायिका के अङ्ग अङ्गकी सुन्दरता देखिकै तहां नायकके नेत्र तहांई थकि-तह्वै रहत हैं शोभा एक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ जातनकी छवि को कवि कोबिद केतेकितीर प्रमाण बतावत। तातनकी छबि देखिबेको तब नैनलगे व्रत ध्यान लगावत॥ साहसको रस पानविषे बहुभांति अनेक उपाय बनावत। शो-भाके सागर मांझपरे अब पैरत कैसहू पार न पावत॥ ८६॥ स्वप्नदर्शन नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु २८॥

दो० देखौं जागि तबै सखी सांकर लगी कपाट॥
कितह्वैआवतजातभजिकोजानेकिहिबाट॥८७॥

यह स्वप्नदर्शन नायिका सखी सों कहतिहै॥ सवैया॥ रंचक नींदपरै जबहीं तबहीं ढिग आनिटिकै खगिकै। हेरिहँसैं रसको बरसैं बतरात महाहितसों पगिकै॥ जागौं तौ डीठपरै न कछू अरु त्योंहीं कपाटरहे लगिकै। इहजानै को आवत धौं कित है पुनि जात कबै कित है भगिकै॥८७॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० सोवतसुपनेश्यामघन हिलिमिलिहरतबियोग॥
तबहीं टरि कितहूं गई नींदौ नींदनयोग॥८८॥

यह स्वप्नदर्शन नायिका सखी सों कहति है नींदकी निन्दा करति है॥ सवैया॥ आली बिछोहु भयो जबते छतियां बहुभांति बियोग बईरी। आजु लला मनमोहनसों सपने में अचानक भेंट भईरी॥ नेसुं बिथा बहरायबे को

हिलिकै मिलिकै रसकेलिठईरी । नींदहूं नींद बिलोयक है तबहीं कहुँभाजिगई सुगईरी ॥ यथा ॥ आवतमें हरिको सपने लखि नेसुक बाट सँकोचनि छोड़ी । आगे है आड़ेभये मतिराम औ लीने चितै चख लालची बोड़ी ॥ बोदनुको रस लैनको मेरी गही करकंज निकंपत ठोड़ी । और भटू न कछू भइ बात गई इतनेही में नींद निगोड़ी ॥ ८८ ॥ अहिवर अक्षर ३४ गुरु ५ लघु २९॥ साक्षात् दर्शन नायकको नायिकाको ॥

दो० लटकिलटकिलटकतुचलत झटतमुकुटकीछांह ॥
चटकभरयोनटुमिलिगयोअटकभटकबटमांह ८९

यह साक्षात् दर्शन जैसी छबिसों देखो है नायक तैसे नायिका सखी सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ लटकि लटकि चलि निरखत बार बार फेरि फेरि ग्रीव छाँह मंजुल मुकुटकी । केसर की खौरपरि कलित रुचिर भाल कुण्डल ललित सोहै बनमाला ठटकी ॥ है गई बिपिन मग अटक भटकभेट तबहींते नैनन में खुभी शोभा नटकी । भूलीसुधि घटकीरी लोकलाज सटकीरी अटकी हिये में पहरानि पीरेपटकी ॥ ८९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥ साक्षात् दर्शन नायकको नायिकाको ॥

दो० चुनरीश्यामसतारनभ मुखशशिकीउनहारि ॥
नेहदबावतनींदलौं निरखिंनिशासीनारि ॥ ९० ॥

यह साक्षात् दर्शन जैसे नायिका देखीहै तैसेही नायक सखीसों कहतहै ॥ सवैया ॥ उन्नतपीन उरोजनको जुगु कोकनुकी छबि पावतुहै । मुख सोहत सोम जुहै यहसी द्युति दीप कुमोद बढ़ावतुहै ॥ यह यामिनिसी गजगामिनि देखत नींद ज्यों नेह दबावतुहै ९०॥दृष्टानुराग नायकको त्रिकल अक्षर ३९गुरु९लघु ३० ॥

दो० सनिकँजालचखझखलगन उपज्योसुदिनसनेह॥
क्यों न नृपतिह्वै भोगवै लहिसुदेशसबदेह॥९१॥

यह दृष्टानुराग है नायिकाके नेत्र अंजनसहित देख नायक के अनुराग उपज्यो सो सखी नायिकासों कहतिहै नायिका परकीया ॥ कवित्त ॥ देखी एक बनिता विचित्रवर बानिकसों जाकी ज्योतिहीसों जगमगि रह्यो गेहु है। बिहँसि बिहँसि मृदु बोलत सरस बानी बरसत अमी मानो बूंदनको मेहुहै ॥ कहैं कविकृष्ण क्यों

न भूपतिहै भोगकरैं रजधानी सकल सुदेश पाय देहु है। नैन मीन लगत पै अंजन लसतु सनी ऐसे शुभयोग समै उपज्यो सनेहुहै॥ ९१॥ दृष्टानुराग नायक को मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० मोहूसोंतजिमोहदृग चलेलागवहिगैल॥
छिनकुछायछबिगुरुडरी छलेछबीलेछैल॥ ९२॥

यह दृष्टानुराग है नायकको देख नायिका में अनुराग उपज्यो है सो नायिका सखी सों कहतिहै नायिका परकीया प्रौढ़ा॥ कवित्त॥ जाघरीते मोहनी को मन्त्र डारि दीनों उन रूपकी मिठाई ताघरीते कलमले हैं॥ ज्यों ज्यों हठ करि रोकरही ओट अंचल में त्यों त्यों अतिबलकरि उसहीकोहलेहैं॥ मोहूसों जहूतो नतो पलकपै करिघातो छोड़ि सबनातो वांकी गैललाग चले हैं। नन्दको कुवँर आली वास बिसु ठगुहैरी देखतही देखिमेरे दोऊ नैन छले हैं॥ ९२॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० फेरिकछूकरिपौरितैं फिरचितईमुसकाय॥
आईजामनिलैनजिय नेहेगईजमाय॥ ९३॥

यह नायिका परकीया जो चेष्टा याकी देखी है सो नायक सखी सों कहत है॥ कवित्त॥ केसर बरन सुबरनहू बरनजीतो बरनी न जाति अवरन बान बैगई। कहत विहारी सुन सरस पियूषमीठी मति करि सीठी बंक नैनन चितैगई॥ भौंहनि चढाई चाई मृदुमुसकाय नेकु चंचल चलायचख चेरो चितैकैगई। लीने करबेली अलबेली सी अकेली तिय जा वनको आई जिय जावन सो दैगई॥ ९३॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० चितवनि भोरेभायकी गोरेमुँहमुसकानि॥
लागनिलटकीअलिगरेचितखटकतनितआनि९४

यह नायिकाकी चेष्टा नायिका सखी सों कहति है पूर्वानुराग होत है॥ कवित्त॥ भूलत न क्योंहूं वृषभानुतनयाकी बानि वह अंगिरान अँगुरिन चटकायकैं। वह गोरे बदुरारे बेदनकी मुसकानि वह चहचही चितवनि भोरे भायकैं॥ घूंघट करनि करकमल उसारि वह लटकि मिलानि सजनीसों लपटायकैं। ऐसी भांति जबतेमैं निरखी है तबहींते पलपल मांझ खटकत चितआयकैं॥ ९४॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८॥

दो० इती भीरहू भेदिकै कितहू ह्वै इत आय ॥
फिरै डीठ जुरदीठसों सबकीदीठबचाय ॥ ९५ ॥

यह नायिका के चितैबेकी चतुराई सखी सखीसों कहति है । नायकहू सखी सखी सों कहै तो होय नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ बैठी सखीन की साभै सभा सबही के सुनैनन माहिं बसैं । पूछेते बात बनाय कहै मनकी मनके सब दास हँसैं ॥ खेलतहैं इत खेल उतै पिय चित्र खिलावत यों बिलसैं । कोउ जानै नहीं दृग दौरि कबै कितह्वै पिय आनन ह्वै निकसैं ॥ ९५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० गड़ी कुटुँब की भीर में रही बैठि दै पीठि ॥
तऊ पलक परिजातु इत सजल हँसौंहीदीठि ॥ ९६ ॥

यह नायिकाके सनेहकी निकाई अरु चितैबेकी चतुराई नायकको कहति है नायिका परकीया ॥ सवैया ॥ प्यारी प्रवीण सनेह सनी नखते शिखलौं सुखकी निधि त्योंहीं ॥ कैसेहुँ मो बरते न टरै जु चुभी चितचाहनि नेह निचोहीं ॥ बैठी बधू गुरुनारिन में जऊ नारिनवाय खरी सकुचोहीं । लाजपगी पल एक तऊ परिजात इतै वह दीठि हँसोहीं ॥ ९६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नहिं नचाइ चितवति दृगनि नहिं बोलत मुसकाय ॥
ज्योंज्यों रुखरुखो करै त्योंत्यों चित चिकनाय ॥ ९७ ॥

यह नायिकाकी चेष्टा नायक सखीसों कहत है कि यह रुखाई मेरे चित्तको चिकनावतु है ॥ कवित्त ॥ जोरत न लोचन नचाइ नेहचाईभरे मृदु मुसकानि कौनभांव दरशात है । बोलब न कबहूं मनमोहन मधुरबैन मोरति न भृकुटी मरोरत न गातहै ॥ कहैं कविकृष्ण वाकी गरबीलीबानि कछू सहज बशीकर को मन्त्र जान्यो जातहै । ज्योंही ज्यों रहत प्यारी राधा रूखरूखे करि त्योंहीं त्यों खरोई खरो चित्त चिकनातुहै ॥ ९७ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० चितई ललचौंहैं चखन डटघूंघट पटमांह ॥
छलसों चलीछुवायकै छिनक छबीली छांह ॥ ९८ ॥

यह नायिका परकीया है चेष्टा करिगई है सो नायक सखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ पूरण सुधानिधिसों बदन दिखाय फिर घूंघटकी ओट कीनी कछुक

लजायकैं ॥ घूंघटके पटमें है निरखि निशंक चितवनि ललचोहीं चाह चीकनी जतायकैं॥कहैं कविकृष्ण मृदु मुलकि अलीकी ओर चली काहू छल सों छबीली छाइ छायकैं। हाहा कहिकोही जाहि एती छबिसोही वह मोहीते न टरत रही जु रीझिझायकैं ॥ ९८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० त्रिबलीनाभिदेखायकरि शिरढकिसकुचसमाहि॥
गलीअली कीओटह्वै चलीभलीबिधिचाय॥९९॥

नायिका परकीया की चेष्टा देखी है सो नायक सखी सों कहत है ॥ कबित्त॥ भोरी बैस इंदुमुखी साँकरी गली में मिलि सुंदर गोबिंद को अचानकही आयकैं। कालिदास जगँजेब अंगनि जवाहिरकी बाहरिहै फैली चांदनीसी छबि छायकैं॥ नेरीगह्यो श्यामसोहै बिहँसि बिलोकी बाम हेरयो तिरछौंहैं नारि नैसुकनवायकैं। गोरे तनु चोरे चित जोरे दृग मेरे मुख थोरे बीच कोरे लागिचली मुसकायकैं॥ ९९ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० डगकुडगतिसीछ्वैचलीठुकचितचलीनिहारि॥
लियेजासु चित चोरटी इहै गोरटी नारि॥१००॥

यह नायिका की चेष्टा नायक सखीसों कहत है ॥ सवैया ॥ भानुसुता जल न्हान ही जात सुजानु सखीन में आनँदबाढ़ी। पीछेते आय सुनाय कछू कहिकै बतियां छतियां करिगाढ़ी ॥ यों पलुकैं पलकैं चितई सुचितो ढिग च्यार रही फिर ठाढ़ी ॥ १०० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० मोहऊंचीआंचरुउलटि मोरिमोरिमुँहमोरि॥
नीठिनीठिभीतरगई डीठिडीठिसोंजोरि॥१०१॥

यह नायिका की क्रिया जो देखीहै सो नायक के चित्तमें बसी है बारबार सखी सों कहत है नायिका परकीया ॥ कबित्त॥ रूपकी अपार राधा ठाढ़ी निज द्वारपर जाकी छबि पर रति वारिये करोरिकै। मोहिं देखि नेसुक लजायकै दहाय भौंह बाजी चितवनि मांझलीनो चित चोरिकै॥ मोरिमतरे मोह जमुहान अंगरानी पुनि आलस बलित नैन बहुरारे ढोरिकै। नीठिनीठि गई भौन भीतर सरोजमुखी डीठिसों मिलाय डीठि नीके नेह जोरिकै॥१०१॥ त्रिकल अक्षर ३९गुरु९लघु३०॥

दो० ऐंचतसोंचितवनिचितै भईओटअलसाय॥

फिरिउझकनिकोमृगनयनदृगनलगनियांलाय१०२॥

यह नायिका की चितवन नायकके चित्तमें बसी है सो नायक सखी सों कहत है वैसेही फिरि चितवै यह अभिलाष ॥ कवित्त ॥ खिरकी उघारि नवनागरि निहारि इत ठाढो बनवारी मनमथ छबि छायकै। बिहँसिबिलोकि शशिवदनी लजायकै सुऐंचतसी मनु भई ओट अलसायकै ॥ लगनलगाई चित लैगई चुरायकै बिहारीलाल रह्यो ठगकीसी मूरिखायकै। उत चितवत सब काज बिसरायकै सुफिर अवलोकिबेकी आश उरलायकै॥१०२॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० वेठाढ़ेउमदाहउतजलनबुझेबड़वागि॥
जाहीसोंलाग्योहियोताहीकेहियलागि॥१०३॥

यह नायिका परकीयाकी प्रकाश चेष्टाहै नायक को देखिकै सखी को आलिंगन करत है सो सखी प्रकट कहति है ॥ कवित्त ॥ मेरो मुँह चूमे तेरी पूजी साध चूमिवे की चोटे औस असुक्योंसि रतप्यास डाटेहैं। छोटे कर मेरे कहा छुवावति छबीलीछाती छुवो जाके छुवायवे को अभिलाष बाढ़ेहैं। खेलन जो आयेहौ तौ खेलौ जैसे खेलियतु कैसीराय कीसौं ते ये कौन खेल काढ़े हैं। फूलफूल भेदति हैं मोहिकहा मेरीभटू भेटै किन जायबे जु भेटबे को ठाढ़े हैं॥ १०३॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० देख्योअनदेख्योकियो अँगअँगसबैदिखाय॥
पीठतिसीतनमेंसकुचि बैठीचितैलजाय॥१०४॥

यह नायिका परकीया को चितैकै लाजकरिबो देखो सो नायक सखीसों कहत है ॥ कबित्त ॥ सोहत स्वरूप सनी बैठीही छबीली राधा होहूं तहां निकस्यो अचानकही आयकै। मेरीओर देख उनदेखो करि मुसकानि अंग अंग सकल सुसुन्दर दिखायकै ॥ पैठतसी तनमें सकुचात न रेचतसी चितवन चाह बैठी सिमट लजायकै। वह मुसकान चितवन सकुचनि क्योंहूं टरत न रही मेरे हियमें डरायकै ॥ १०४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० चिलकचिकनईचटकिसों लफतिसटकलौंआय॥
नारिसलोनीसांवरी नागिनिलौंडसिजाय॥१०५॥

यह नायिका की सांवरी सूरति देखि आसक्तभयो सो सखीसों कहत है॥

कवित्त॥ चित्रकति चारु चिकनाई की चटक भरी चलति फलति जैसे लंग चलकति है। सांवरी सलोनी अतिलोनी अजौं होनी बैस शोभा सत्रीसी सपनि सहत लसंति है॥ कुटिल सुभाई चितवनि मैन विषभरी नागिनि ज्यों यह ब्रजनागरि बसति है। मनको डसति अरु तनको लहरिआवै लागत न यंत्र मंत्र अद्भुत गति है॥ १०५॥ करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६॥

दो० मैंहौंजान्योंलोयननु जुरतबांटिहैजोति॥
कोहोंजानतुडीठिकोडीठिकिरकरीहोति॥१०६॥

यह नायिका अपने नेत्रन को आसक्त सखीसों कहति है अरु यह प्रकट करति है कि जबते वे आंख देखी तबते और कछू सूझत नाहीं॥ कवित्त॥ जादिनाते आली तैं कही कि मनमोहनके लोचन सलोने देखे अतिहित बाढि है। तादिना ते मैंहूं यह जानी चारि नैनभये ज्योतिकी प्रकाश कछू अधिकाई चाढि है॥ जोरतही नैन बिथा तनमें बगरिगई मदनहुताशन बरतजाढि जाढिहै। कौन यह जानहो डीठिही की डीठिबीर होत किरकटी कोऊ सकत न काढि है॥ १०६॥ मराल अच्छर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० त्योंत्योंप्यासेहीरहत ज्योंज्योंपियतअघाय॥
सुगनसलोनेरूपकोजनचषतृषाबुझाय॥१०७॥

यह नायिका के नेत्रलगे हैं सो सखी सों कहति है॥ कवित्त॥ हरिमुखचंद त्यों चकोर है रहति जानि लोचन कमलगत भौंरकी गहतहैं। देखतहू देखत रहत दिखसाध लागी होत अनमेषयों बिशेष उमँगतहैं॥ टोनो कछू प्राणप्यरिको सलोनो रूप ताते नेक न बुझात तृषा कल न लहत हैं। तृप्त न होत क्योंहूं माईरी नयन मेरे पियत अघाय त्यों त्यों प्यासेई रहत हैं॥१०७॥ पयोधर अच्छर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० अलियनलोयनशरनको खरोबिषयसंचार॥
लगेलगायेएकसे दोउनकरतशुमार॥ १०८॥

यह अपने नेत्रकी अवस्था सखीसों कहत है अथवा नायक कहै॥ कवित्त॥ शर जाके लागै ताहि सुधि न रहत कछू जो हनत ताके उर रंचक बिथा न हैं। तिनते अधिक कुसुमायुधके पांचों बान जिनके लगे ते टरैं मुनिन के ध्यान हैं॥ कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई जियजानी अली सबहीतें बिषम बिशेष नैन

बानहै। दुहुँन बिकलकरैं जतन लगैं न आन दुहूंभांतिलगेहू लगायेहू समान हैं॥ १०८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० दृगनिलगतबेधतहियहि बिकलकरतअँगआन॥ ये तेरे सबते बिषम ईछन तीछन बान॥ १०९॥

यह नायिका के नेत्र देखि नायकको बिकलताई भई सो सखी नायकसों कहतिहै॥ सवैया॥ भौंह कमान बिना जिहतैं छुटिदेदेचलैं दुहुंओर अनेरे। नैनन आनि अचूक लगे हिय बेधत क्योंहूं फिरैंनहिं फेरे॥ और सबै अँग ब्याकुल है सरसातबिथा घइलात घनेरे। रीतिगहैं सबते बिषमै बिषमै शर ईछन तीछन तेरे॥ १०९॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

सो० कोड़ाआंसूबूंद कसिसांकरबरुनीसजल॥ कीनैंबदननिमूंद दृगमलंगडारेरहत॥ ११०॥

यह नायिका देख नायक के नेत्र बिवश भये हैं आंसूपरत हैं मूंदे रहत हैं सो सखीसों सखीकहति है॥ सवैया॥ तैं जबते बृषभानुसुता हरिकेदृग नेक निहार हरे हैं। वे तबतें न हले न चले रहे बाहि चितौनकि चाह भरे हैं॥ कोड़ाकिये अँसुवान कि बूंद जंजीरबड़ी बरुनी जकरे हैं। नेकअबै उनकी सुधिलेहु मलंगमनों मुंहमूंदपरे हैं॥ पुनः कबित्त॥ तपैं बिरहानल में पलकउठाये भुजा ध्यान लीन मननिशिबासर बिहात हैं। डेरे लाल सेलीसाज अँसुव टपकमाल कोये सोये बसन भगौहैं दरशातहैं॥ आठौ याम जागैं अंगबिशद बिभूतिभरे बोलत न मुख दुखसहे शीतबात हैं। तेरे मिलबेके बेष योगी होन हेतुराधे योगी युगलोचन बियोगीके लखात हैं॥ ११०॥ शार्दूल अक्षर ४२ गुरु ६ लघु ३६॥

दो० कहतसबैकबिकमलसे मोमतनैनबखान॥ नतरुकुकतइनबिपलगतउपजतबिरहकृशान १११

यह नेत्र लगनि है आंखलगेते बिरहरूपी अग्निहोत है यह बचन नायक कहै तो बनै॥ कबित्त॥ बरनि बरनि दृग कहत सकल कबि कमल कुरंग मीन खंजन समान हैं। कहैं कबिकृष्ण रचिपचि चतुराननने लोचन ये पाहनबनाये मेरे जान हैं॥ कमलसों कमल लगाय देखैं कैयेबेर एकआंक क्योंहूं उपजतु न कृशान हैं। लागतही तिय नैन तबहीं उपजिउठै लगनि अगनि याते प्रकट प्रमान हैं॥ १११॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० सबहीत्योंसमुहातिछिनुनचलतसबनदैपीठि ॥
वाहीत्योंठहरातयह बिकलनुमालौंडीठि ॥ ११२ ॥

यह नायिका लज्जिताहै सखी नायकसों कहति है सखीको बचन सखीहूसों बनै ॥ कवित्त ॥ लालमनमोहन की छबिपर तूतो बलि रीझि रही मोहिं बह-रावतिहै भोरी ज्यों । प्रीति उर अन्तरकी प्रकट बिलोकि प्रति सौंहकिये कैसे निबहत चोरी चोरी ज्यों ॥ सबत्यों लखत मिले काहूसों न तेरी डीठि पीठि दै चलति पुनि सबही की ओरी ज्यों । इतउत हेरिचि चोरहीकी ओर आई रहत है ठहराय मंत्रकी कटोरी ज्यों ॥११२॥ करभ अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० ढरेढारतेहीढरति दूजेढारढरैन ॥
क्योंहींआननआनसों नैनालागतनैन ॥११३॥

यह नायक अपने नेत्रनकी आसक्ति कहतु है अरु नायिका के भ्रमहै कि नायक औरसों आसक्त है सो नायक नायिका को भ्रम दूर करत है जो नायक सों कहे तो उरहनोहू सम्भव है ॥ सवैया ॥ और ते बानपरी सुपरी न टरै वह कोटि उपाय कियेहूं । कृष्णकहैं जिहिरीझि रचे तितते न लचै न कहूं ललचेहूं ॥ त्योंहींढरे जिहढार ढरे नहिं दूसरेढार ढरे सपनेहूं । आनकिये कहूं आनन आन सों नैन हू नेक न लागत केहूं ॥ ११३ ॥ कच्छ अक्षर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० हरिछबिजबजलतैंपरे तबतेंछिनबिछुरैन ॥
भरतढरतबूड़ततिरत रहतघरीलौंनैन ॥११४॥

यह नायिका अपने नेत्रनकी आसक्ति सखी सों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ आजु निरख्यो मैं ब्रजराज को कुँवर कान्ह जाके अंग अंग आली मनही हरतु है । कृष्णप्राणप्यारे की दुहाई वा निकाई देखे कोरि रतिपति अति लाजनि मरतुहै ॥ ताकी शोभा सलिलमें जबते नयनपरे तबते घरीलों छिनहू न बिछुरतु है । ऐसे भये रचतही करत अनेकभाइ भरतढरत पुनि बूड़त तिरतुहै ॥११४॥ पयोधर अ-क्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० ललनतुम्हारेरूपकी कहौरीतियहकौन ॥
जासोंलागतपलकपलु लागतपलकपलौंन११५

यह नायिका की अवस्था सखी नायकसों कहति है कि जबते तुम देखो हो तबते वाके पलकहू नाहिंलागत नायिकाहू नायकसों कहै तो संभव है ॥

सवैया ॥ बारक देखै सुध्यो न रहै दिखसाध्लगैं कुलकानि भगैं। मोहनीरीति कछू-मनमोहन रावरेरूपको यौं उमगैं ॥ कौनठगौरी लहीकितकीहू रमानों वशीकर मन्त्रपगैं । जाकी कहूँ पलएकलगे पलताकी पलौं पलकैं न लगैं॥ ११५ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हैंहियरहतहईछईनईजुगतजगजोय ॥
डीठिहिडीठिलगेदईदेहदूबरीहोय ॥ ११६ ॥

यह नायिका के नेत्र नायकको देखके लगे अरु देह दूबरी होतिहै । सो नायिका सखी सों कहति है सखी सखी हू सों कहै तो बनै अद्भुतहू है ॥ सवैया ॥ देखत देखतहू न लहै कल प्रेमपरोरि उठै अतिभारी । देखे बिना न सोहाय कछू पुन-हार रटै अति होत दुखारी ॥ व्याकुल है अकुलाय महा मुरझायरहै निशिनींद बिसारी । नैनलगे तनदूबरो होय अनोखी सनेह की रीति निहारी ॥ ११६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० देखतकछुकौतुकइतैंदेखौनेकनिहारि ॥
कबकीइकटकडटिरहीटटियांअँगुरिनफारि ११७

यह नायिका कहति है नायिका को देखति है सो सखी नायक के चाव बता-वत है । सखी को बचन नायक सों प्रीति करायबो प्रयोजन ॥ कवित्त ॥ मैन-हूंते ऐन मनमोहन तिहारी छबि नैनन में खुभी ब्रजबाल रिझवारिकैं । बगरको बासु सासुननँदको तिरासातैं निरखिसकै न प्यारी बदन उघारिकैं ॥ बिनदेखे कल न परत याते देखिबे को करयो है उपाउ देखौं इतधा निहारिकैं । कबकीनि-मेष भूलि लोचन लगायइत डटिरही टाटी करपल्लव सों फारिकैं ॥ ११७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० इनअँखियांदुखियानकोसुखहीसिरज्योनाहिं ॥
देखबनैनदेखिबेबिनदेखेअकुलाहिं ॥ ११८ ॥

यह अपने नेत्रन की लगनि नायिका सखी सों कहति है प्रौढ़ा परकीया ॥ कवित्त ॥ आपहीते लागें येतौ कहे काहू के न लागें रैनदिन जागे हैं बियोग आगिअखियां । रूप माधुरीको ज्यौंज्यौंपीवैं त्यौं त्यौंभूखी रहैं होहिं न अदूखी ये बिदूखी सदा लखियां ॥ लपट निपट पट संपुट न रोंकी रहैं अकुलाय ढहैं जाय मधुपी समझियां । चैनहै न आठौयाम इनहींको ऊधोराम तनु सुबिहायो

तामें दुखिहाई अँखियां ॥ ११८ ॥ सेनक अक्षर २९ गुरु १९ लघु १० ॥

दो० चकीजकीसीह्वैरहीबूझेबोलतनीठि ॥
कहूंदीठिलागीलगीकैकाहूकीदीठि ॥ ११९ ॥

यह नायिका लक्षिता है सखी नायक सों कहति है सखीहू सों कहति है॥ सवैया ॥ आजचकीसी जकीसी कहा कछु अंग सम्हार हिराइसी हेरी । बूझे हूं नीठकहै मुखबैन हलै न चलै जनु चित्रनकेरी ॥ मेरीलखे यहतेरी नईगति मो मति शोच समूहन घेरी । दीठिलगी किधौं काहूकि तोहिंकि दीठिलगी कहुंकाहूसों तेरी ॥ ११९ ॥ मराल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० नेहननैननकोकछूउपजीबड़ीबलाय ॥
नीरभरेनितप्रतिरहैंतऊनप्यासबुझाय॥ १२० ॥

यह नायिका अथवा नायक अपने नेत्रनकी आसक्ति सखीसों कहै है सखी सखीसों इनकी व्यवस्थाकहै तऊसंभवहै ॥ सवैया ॥ एकपलौंनलगैं पलकैं ललकैं लखिबेकिहिलागी चटी । नीरभरीनिशिद्योसरहैं न मिटैं तऊ भूरितृषा उपटी ॥ आठहूयाम तैं तरफैं उपचारहूसों न घटै न घटी । यह रीति लगी नहीं आंखिन को कोऊ पावक व्याधि प्रलै प्रकटी॥१२०॥मरालअक्षर ३३ गुरु१५ लघु१८ ॥

दो० कैवाआवतयहगलीरहैचलायचलैन ॥
दरशनकीसाधैंरहैंसूधेह्वैयँननैन ॥ १२१ ॥

यह नायिका अपने नेत्रनकी दशा सखी सों कहतिहै यहनायिका मध्यापरकीयाहै॥ सवैया ॥ कान्हअली बहुबेरगलीमहँ आवत चारु सिंगार कियेहूं । देखिवे को तबहींतब हौं ललचाइ रहौं न चलाय चलेहूं ॥ लाज अचानक आयगई पछिताइ रहै अपने जियमेंहूं । सोहैं चितैबेकी साध रहै बरसूधो विलोचन होत न केहूं ॥ १२१ ॥ मरकट अक्षर ३१ गुरु १७ लघु १४ ॥

दो० साजैमोहनमोहकोमोहींकरतकुचैन ॥
कहाकरौंउलटेपरैंटोनेलोनेनैन ॥ १२२ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा परकीया नायक को देख नेत्र याके अकुलातहैं सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ बूझतहौं सतभाय सखी यहसीख इन्हैं सिखई कहु कौने । मैं सजे मोहन मोहिबेको बहु अंजनसाज बनाय सलोने ॥ देखतहीं

तलुचाय रहे अब ये अपने सपनेहु न होने। मोहींको दैनलगे दुखनैन ये ज्यों उ-लटे परिजात हैं टोने ॥ १२२ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० मोहूंसोंतजिमोहदृगचलेलागिउहिगैल ॥
छिनकछ्वायछबिगुरुढरीछलेछबीलेछैल॥१२३॥

यह नायिका अपने नेत्रन की आसक्ति सखी सखी सों कहति है ॥ कबित्त ॥ जा घरीते मोहनी को मंत्र डारदीनों उन खाकी मिठाई तापरी ते कलमले हैं। केतो हठकरि रोकिहारी ओट अचलकी त्यों त्यों अति बलुकरि उतही को हले हैं ॥ मोहूं सों जुहोतो नातो पलक मैं करिहोतो छोड़ि सब तातो वाकी गैललागि चले हैं। नन्द को कुँवर आली बीस बिस्वे ठगुहैरी देखतही देख मेरे दोऊ नैन छले हैं ॥ १२३ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लोभलगेहरिरूपकेकरीसाटजुरिजाय ॥
होंइनबेचीबीचहीलोयनबड़ीबलाय ॥ १२४ ॥

यह नायिका अपने नेत्रन की आसक्ति सखी सों कहति है॥ सवैया ॥ नन्द-किशोर की मोहनी मूरति देखतही अति मोमन भाई। तौ लगि लोभलगे दृग आगेई जायमिले मिलिसाद मिलाई ॥ आपनो स्वारथ साध्यो सबै बिधि होई न बीचही बीचरी माई। कैसे करों न कछू बनिआवत नैननके मतमें तो ठगाई॥१२४॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु १६ ॥

दो० यशअपयशदेखतनहींदेखतश्यामलगात ॥
कहाकरोंलालचभरेचपलनैनचलिजात॥१२५॥

यह नायिका को सखी शिक्षा देत है तासों अपने नेत्रन की आसक्ति कहतिहै॥ सवैया ॥ सासु रिसाति भखै ननँदी जानि तू सिखवै सखि सीख के बैना। है ब्रजबास चवायभई चहुँओर चले उपहास की सैना ॥ देखत सुन्दर सांवरी मूरति लोक अलोककी लीक लखैना। कैसी करों हटके न रहैं चलिजात तऊ लखिलालची नैना ॥ १२५ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० नैनानेकनमानहीं कितोकह्योसमभाय ॥
तनमनहारेहूंहँसैं तिनसोंकहाबसाय ॥ १२६ ॥

यह नायिका अपने नेत्रन की आसक्ति कहतिहै ॥ सवैया ॥ सहिये जगके उपहास निते रहिये गुरुलोगन मांझगसें। डर आनि यहै अपने उर हौं समझाय

रही नहिं नेकुत्रसे ॥ अरु रक्षक मेरो कह्यो न करैं तनहूं मनुहारैं तऊ हुलसैं। यह नेम गह्यो सजनी इन नैननु पै हरिहेर हँसेई हुलैं ॥ १२६ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सकेसताइनतमबिरहनिशिदिनसरससनेह ॥
रहैवहैलागीदृगनिदीपशिखासीदेह ॥ १२७ ॥

यह नायिका को ध्यानहूं करत है तऊ बिरह घटत नाहिं सो नायक सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ वा मृगलोचनि के बिछुरे जु भई गति सो नहिंजात उचारी। शुद्ध दशा परिपूरण नेह निवातथली उर अन्तर धारी ॥ यद्यपि दीपशिखा सम नैनन लागिरहै तनकी द्युति प्यारी। तद्यपि सूझै हिये न कछू भरिपूर रह्यो बिरहातम भारी ॥ १२७ ॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० लाजलगामनमानहींनैनामोबशनाहिं ॥
येमुहँजोरतुरंगलौंऐंचतहूचलिजाहिं ॥ १२८ ॥

यह नायिका सखी सों अपनी आसक्ति नेत्रनकी अवस्था कहतिहै ॥ सवैया ॥ देखत वा नटनागरिकी छबि फांदिपरे हटके न रहाहीं। लोचनलोल तुरी मुहँजोर सुलाज लगाम को मानत नाहीं ॥ ऐंचतहौं अपने इतको बलिये बलकैं उतही चलिजाहीं। कैसी करों नहिं मो बश ये कुल काम के चाबुक ते न डराहीं ॥ १२८ ॥ अथ चित्तलगनि मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० फिरफिरचितउतहीरहतटुटीलाजकीलाव ॥
अंगअंगछबिझौरमेंभयोभौंरकीनाव ॥ १२९ ॥

यह नायिका के अङ्गकी छबि पै रीझीहै सो अपने चित्तकी आसक्ति सखीसों कहत है ॥ कवित्त ॥ यौवन महानद में रूप को सलिल भरयो तरल तरङ्ग हाव भावन को भाव है। अङ्गअङ्ग छबिकी उमङ्ग झरझरी भौंर चपलकटाक्ष तहां फँस्यो चित नाव है ॥ चलिपै न सकत भ्रमत रहै वाही ठौर तरकि तनूका जिमि टूटी लाज लावहै। लागत न क्योंहीं कुलकानि की बिशाल बली धीरज प्रबल पतिवारी कौन दाव है ॥ १२९ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० इततेउतउततेइते छिननकहूंठहराति ॥
जकरनपरचकरीभईफिरिफिरिआवतजाति १३०

यह नायिका मध्या परकीया है सो याकी व्यवस्था सखी सखीसों कहति

है जो सखी नायक सों कहै तो संभव है ॥ सवैया ॥ जबतै अटकी नवनागरसों तबते न कहूँ मन लावत है ॥ ठहरात नहीं छिन एक कहूं निशि बासर ज्यों बहरावत है ॥ कबहूँ इतते उत धावत है कबहूँ उतते इत आवत है। चकरी जिमि आवत जातवधू पलकौं न कहूँ कलपावत है ॥ १३० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० कोजानैह्वैहैकहाब्रजउपजीअतिआगि ॥
मनुलागेतनुनालगैचलेनमगलगिलागि १३१ ॥

यह नायक अथवा नायिका के दृष्टानुरागते विरहभयो है सो विरह की आग सों मन व्याकुल है सो सखी सों कहत है ॥ सवैया ॥ दीसै न धूम बरै बिन ईंधन उन्नत है प्रकटै न शिखाहै। नैसक नैननलागतही मनु आगिलगे सब अंगन दाहै ॥ लोचन नीरढरैं न बुझै उपजी ब्रज में कोउ आग महा है। देखेहूं दीठ परै न कछू अब जाने धौं आगे को ह्वैहै कहा है ॥ १३१ ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० डरनटरैनींदनपरैहरैनकालबिपाकु ॥
छिनकछाकुउछकैनफिरखरोबिषमछबिछाकु १३२

यह नेत्र लगनि है सो नायिका अथवा नायक सखी सों कहै है कि छवि को छकु छकोखरो बिषम है सो बिषमता वर्णन करैहै ॥ कवित्त ॥ सुधि कौन करै नींद नैसको न परै महाभय ते न टरै मुख निकरै न चाकु है। कहै कविकृष्ण क्योंहूं एकबेर छकै सो तो उछकै न नेको न समैको परिपाकु है ॥ सीरो लागै बरै निशिदिन तरफरै पलकनि गतिहरै धरै काहूको न धाकु है। और मतवारे तेतो मेरे मतवारे यह सबही ते बिकट बिषम छबि छाकुहै ॥ १३२ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० उड़ीगुड़ीलखिललनकी अँगनाअंगनमांह ॥
बौरीलौंदौरीफिरतछुवतिछबीलीछांह ॥ १३३ ॥

यह नायिका परकीया प्रौढा है सो नायक की चंगकी छांहछुयेते मिलेही को सुख मानतु है सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ नन्दलला नवनागरि पै निजरूप दिखाइ ठगोरीसी नाई। बाहरजात बनै गृहते न बिलोकिबेको अतिही अकुलाई ॥ प्यारे की चंग इतेमें उड़ी लखिमोद भरी निजआंगन आई। होत

गुड़ीकी जितै जित छांह तितै तित छूबेको डोलत धाई ॥१३३॥बारन अच्चर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० चलतघेरघरघरतऊघरीनघरठहराय ॥
समझउहींघरकोचलैभूलवहीघरजाय ॥ १३४॥

यह नायिका प्रौढ़ा परकीया है जहां चित्त लाग्योहै तहां जातहै सखी सखीसों कहति है ॥ कवित्त ॥ निदरक भई आनि गावत है नंदघर और ठौर कहूंटोहै हू-न अहटाति है । पौरियाके पिछवारे देहरी उसारे द्वारे आंगन अटारी इहीबीच मँड़राति है ॥ हरि रसराती सिख नेकहूं न होती होति प्रेमरसमाती न गनाति दिनराति है । जबजब आवति है तबकछु भूलिजात भूल्यो लेन आवति है फेरि भूलिजात है ॥ १३४ ॥ मरकट अच्चर ३८ गुरु १७लघु २१ ॥

दो० ह्याँते ह्वाँ ह्वाँते यहां नेको धरत न धीर ॥
निशिदिनडाढ़ीसीफिरतबाढ़ीगाढ़ीपीर ॥१३५॥

यह नायिका के चित्त में लगन लगी है सो याको मन कहूँ कल पावतुनाहीं याकी दशा सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ शोभा मनमोहनकी परम रसालचित्त चुभि ब्रजबालकैन छिन बिसरे कहूं । बरसत जल तरसत दृग देखि-बे को कहो ऐसी लगनि दुराये हूं दुरेकहूं ॥ घरते बगर आवै बगर ते घरधावै फिरै ज्यों बिकल पल कल न लहै कहूं । बाढ़ो मनमथ बीर नैसको धरै न धीर डाढ़ी सी फिरत ठाढ़ी छिनु न रहै कहूं ॥१३५॥ चल अच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० पलनचलैजकसीरहीथकसीरहीउसास ॥
अबहीतनुरितयोंकहौंमनपठयोकिहिपास १३६

यह नायिकाकी प्रीति लगीय लगी है सुरति वहीं जायहै सो याकी दशादेखि सखी कहति है ॥ कवित्त ॥ सासन उसासति है बासकी सम्हारहै न ऐसी ह्वैकै कौनकैधौं हितमें हितैरही । कितुहेरी तेरी मनुरीतौ सों लगत तन अबहीं तू सुध बुध कहि क्यों बितैरही ॥ चित्रकीसी लिखीडरी जकित अचेतभई पलकन लगत भूल चकित चितैरही । काहू हेरि हरीमति बिसरी सबै सुरति हौंतो तेरीयहगति देखि थकितैरही ॥ १३६ ॥ पयोधर अच्चर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० ज्यों ज्यों आवतनिकटनिशि त्योंत्योंखरीउताल ॥
झमकिझमकिटहलेंकरै लगीरह चटेंबाल॥१३७॥

यह नायिका प्रौढ़ा है सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया॥ गौनोभये दिन कैयो भये हियमें हरि हेत कि ज्योतिसिजागी । बासर ज्यों बहरावत नीठि बिथी चसकें रसमें अनुरागी॥ आवत ज्यों ज्यों नजीक निशा तिय त्योंत्यों उछाह उमंगनि पागी । सत्वर काज करै घरके रजनी रतिकेलिकै लाहक लागी ॥१३७॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३०॥

दो० भृकुटीमटकनिपीतपट चलतलटकतीबाल ॥
चलचखचितवनचोरचितलियोबिहारीलाल १३८

यह नायिका प्रौढ़ा है नायककी शोभा देखि मोहित भई है सो अपने चित्तकी वृत्ति सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ बनते निकस्यो बनमालगरें बनिता मृग बागुरिमें दृगकीने। फेंटकसे कटि पीतपटी उपटी छबि सिंधु सुधारस भीने॥ कै नटनागर चेटक सों चलचाहनिही चितुगो संगलीने । लीनौं सोकौन किशोर कन्हा मुरली कर मोरपखा शिरदीने॥१३८॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० छुटननपैयतुबसिछिनकु नेहनगरयहचाल ॥
मास्योफिरफिरमारिये खूनीफिरैखुस्याल ॥ १३९ ॥

यह लगन को बर्णनहै जाके जाके लगति है ताको अधिक दुखहै जाकी लगति है ताके कछू मनहूं में नाहीं आवत सो नायिका अवस्था सखीसों कहतिहै सखी सखीहू सों कहै तोवनै ॥ कवित्त ॥ छिनवसे छूटिये न बिन बसे बनपटी नेह नगरी में यह अटपटी रीतिहै। लीजतछोंड़ाय मनुरतन यतन नाहिं अतनुमहीप तहां अधिक अनीति है॥ मारेहीं को मारियतु खुशीभये खूनी फिरैं जीतेहीकी हारि अरु हारेहीकी जीतिहै। सरवसु दीजे तऊ परवश परियतु जहां कछूलोकपरलोक की न भीतिहै ॥ १३९ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० क्योंबसियेक्योंनिबहिये नीतिनेहपुरनाहिं ॥
लगालगीलोयनकरैं नाहकमनबँधजाहिं॥१४०॥

यह लगन है नेत्रनकेलगे मन बंधतु है यह अद्भुत अनीति है सो नायिका अथवा

नायक सखी सों कहैहै ॥ कबित्त ॥ पावक प्रचण्ड याते भागेहूंनछूटियतु बरियतु ज्यों ज्यों उपचार कीजियतुहै । प्रबलक जानु पै मग न चलत पैये चितावतु दीजै तऊ हित भीजियतु है ॥ ऐसे प्रेमपुर कैसे बसिये निबहिये क्यों देखे ये अनीति छिनु छिनु छीजियतु है । लागनिकरत आय नैन मैनमतवारे नाहक थिचारो मनु बांधि लीजियतु है ॥ १४० ॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० झमकिचढ़तउतरतअटा नेकनथाकतदेह ॥
भईरहतनटकोबटा अटकीनागरिनेह ॥ १४१ ॥

यह नायिका प्रौढ़ा नायककी शोभा देखि आसक्ति भई सो देखिबे को चढ़ति उतरति है सो याकी व्यवस्था सखी सखी सों कहति है ॥ कवित्त ॥ कान्हर की बनक बिलोकिकै बिकानी बाल तादिन ते देखिबे को यतन करतु है । सुरभी चराय ब्रज आइबेकी बेर जानि सरबस होत गृहकाज बिसरतु है ॥ सांक गुरुजन सांक है न ठाढ़ीरहै छिन इत छिन उत छिन याविधि ढरति है । नटकेबटा ज्यों नटनागर के नेह पागी ऊंचे अटा झमकि चढ़ति उतरति है ॥ १४१ ॥ पयोधर अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० मैंतोसेकैबरकह्यो तूजिनइन्हैंपत्याव ॥
लगालगीकरलोयननु उरमेंलाईलाव ॥ १४२ ॥

यह लगन है नायिका अथवा नायक अपने मन सों कहै है सखी सों कहिबो संभवित नाहीं ॥ कवित्त ॥ तोसों मैं कहीही कैयो बेर समझाय इन नैनन के मतलागे भारी खता खायबो । तब तो न सिखमानी इनहीं की मति ठानी अब कहाहोत परबश पछतायबो ॥ लगालगी इनकीनी उरको लगाय दीनी लगनि अगनि ताके कहां भगिजायबो । कीजत यतन सीरो त्यों त्यों होत दुख नेरो निशिदिन अनत अनंगको सतायबो॥१४२॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० सारीडारीनीलकी चोटअचूकचुकैन ॥
मोमनमृगकरबरगह्योअहेअहेरीनैन ॥ १४३ ॥

यह नायिका के नेत्रदेख नायकको मन हाथ रहतनाहीं सो सखी सों कहै तोहू बनै ॥ कवित्त ॥ जाइचढे यौवन के बनमें बिहार करैं काहूके न रोंके रहैं बिक्रम अकथके । भृकुटी कुटिलचाल अंजन असितबास तरलकटाक्ष गहैं आयुध सुहथके॥

सारीनीली टाटीओट आवत अचानकही करतअचूक चोट रहत नथथके। मोमन कुरंगको ये करलेत हथायके साचे तेरे नैन ये अहेरी मनमथ के॥ १४३ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० जेतबहोतदिखादिखी भईअमीइकआंक॥
गैतिरछीदीठनिअबै ह्वैबीछीकेडांक॥ १४४॥

यह पूर्वानुराग जे चितवन संयोग में सुख दीन्हों ते बियोग में सुधिआयो सालतिहै सो सखी नायिका अथवा नायक सखीसों कहै है बिरहकी दशा अवस्थान में सुमिरन कहिये॥ सवैया॥ रंगरली में भलीबिधि सों बहुभांतिनके सुख देत हैं जेई। ते इनकुंज भयेप्रतिकूल बिलोकहिये दुखसूल सलेई॥ नेहके आदि रसीली चितौन हुती इकआंक अमीसमतेई। बीसबिस्वे बिष शायकहै उरसालत यांकी बिलोकनि वेई॥ १४४॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० नेकोबहनिजुदोकरी हरषजुदीतुममाल॥
उरतेबासछुट्योनहीं बासछुटेहूलाल॥ १४५॥

यह पूर्वानुराग है नायिका की प्रीति सखी नायकसों कहतिहै तो तुमसों कहा बसनहीं॥ सवैया॥ जादिन वाही अलीनको देखत रीझि हिये हितु मानकै भारी। आपनेहीते उतारदई तुम फूलकीमाल बिशालबिहारी॥ तादिनते वह बारिभवारको प्राणहुंते लागी अतिप्यारी। बासगई कुंभिलाइगई पै करी न तऊ उरते छिनुन्यारी॥ १४५॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० खिनखिनमेंखटकतसुहिय खरीभीरमेंजात॥
कहजुचलीबिनहीचितैं ओठनहींमेंबात॥ १४६॥

यह नायिका परकीया है कहीं भीर में नायक देखो है सो वाने जो कियो सो कीनों इन देखी पै बात न सुनी सो सखी सों कहति है॥ सवैया॥ आज मिली ब्रजबाल अचानक मोमति वाकि सनेह गई है। जाती हुती अति भीर में सुन्दरि मोतनु हेरि हियो उमही है॥ लाजते पै न बिलोकिसकी बन कीन तऊ रसरीति सहीहै। ओठनही में गई जु कछू कहि मैं न सुनी पछताचो यही है॥ १४६॥ मच्छ अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० बनितनकोनिकसतलसत हँसतहँसतइतआय॥
दृगखंजनगहिलैगयोचितवनिचोपलगाय॥ १४७॥

यह नायिका प्रौढ़ाहै जैसी छविसों श्रीकृष्ण देखत हैं तैसेही अपने नेत्रन की लगनि सखीसों कहति है॥सवैया॥ आजकहो बनको इतह्वै चनि बानिकसों यशुदाको कन्हाई। मोर किरीट लसै मुरली लकुटी अरु पीतपटी छबिछाई॥ मोढिग आय भरयो रसभाय हरे मुसकाय मुरयो सुखदाई। केपिकी चाहन चोपलगायकै लेगयो नैन में मोलिनिमाई॥ १४७॥ मदकलअक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० जबजबवहसुधिकीजियतुतबहिंसबहिसुबिजाहिं॥
अँखियनअँखिलागीरहैंआंखौलायतनाहिं॥१४८॥

यह पूर्बानुराग नायिका अथवा नायक सखी सों अपनी बात कहै है॥सवैया॥ यह प्रीति कि रीति अनोखी लखी कछु जानि न जात कहा गति है। चितचाहकी चोप चढ़ोयेरहै अरु प्रेमबिथा उरपागति है॥ नितआंखिनसों वेई आंखिलगी रहैं आंखि न कैसेहू लागति है। जबहीं जब वे सुधकीजतहै तबहीं सबही सुधि भागतिहै॥ १४८॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० जहांजहांठाढ़ोलख्यो श्यामसुभगशिरमौर॥
बिनहूंउनछिनुगहिरहतदृगनअजौंवहठौर॥१४९॥

यह पूर्बानुराग है जहां श्रीकृष्ण देखे हैं तेई ठौर श्रीकृष्ण की भावना करिकै नेत्रन को आग्रहन करतु है सो नायिका सखी सों कहै है॥ कवित्त॥ केलि सुखसागर में झेलि रंगरली परि पूरन बिविधबिधि करती मनोरथनु। तनमन बाद तो उमगि अनुरागु भागु आगतहो मघवा शचीको अनहूतैअनु॥ कृष्ण प्राणप्यारे की दुहाई अतिछबि छाई जिन जिन कुंजनि मिलत होरी श्याम घनु। तेई तेई कुंज अबड़ी नहूं बिलोकै बिनु माई गहि राखत घरीकलौं अजौं दृगनु॥ १४९॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० सघनकुंजछायेसुखदसरसिजसुरभिसमीर॥
मनह्वैजातअजौंवहै उहियमुनाकेतीर॥१५०॥

यह पूर्बानुराग है सो यमुनाके तीर संयोग में जो चित्तकी वृत्ति होतही सो वही भावना करिबो सही होतिहै सो नायिका सखीसों कहतिहै॥ कवित्त॥ सघन निकुञ्जछाये सुखरसुहाये अरु मंडित सरस गुंजपुंज मधुपन की। प्रफुलितमंजु अरविन्दनके वृन्द आवै त्रिविध बयारिलै सुगन्ध कुसुमनकी॥ लतिका ललित छबिवलित लहलहाति जेहुती बिहार भूमि नन्दकेसुमन की। कृष्ण प्राणप्यारे

कीसों वेई यमुनाकेतीर अजहूं निरखि वहगति होति मनकी ॥ १५० ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० फिरिफिरिबूझतकहिकहाकह्योसांवरेगात ॥
कहाकरतदेखेकहाअलीचलीक्योंबात ॥ १५१ ॥

यह नायिका अधिक आसक्त है सो सखीको बेरबेर वाहीकी बात बूझति है ॥ कबित्त ॥ कबहूंक आलीपर अंगिरायडारें अंगु दिनबहरावे क्योंहूं कल न पराति है। ऊतर सहेली लाय उनके संदेशो सुनि सुनिते प्रसिद्ध मनुऐसिये अराति है ॥ हाहा कहि कैसेगई कैसी कैसी बातैंभई कहाहै ललन मनधीर न धरति है। एक बेरबूझि फिरि बूझि औरों बूझि फेरि फेरिफेरि वहै बात बूझिबो कराति है॥ १५१ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० मननधरतमेरो कह्यो तूआपनेसयान ॥
अहेपरनिपरप्रेमकेपरहथपारिनप्रान ॥ १५२ ॥

सखी नायिका सों कहति है कि प्रीतिके प्रसङ्ग ते प्राण परायेहाथ परति हैं सतमति करै तो यह प्रसन्न है कि सखी प्रीतिकरति मनै क्यों करतिहै सो मनौ-नाहिं करति प्रीतिदृढावति है कि प्राण पराये हाथ परैंगे जो तोहिं कहति है तो कर मानवती के प्रसन्न सखी नायिका सों कहै तो येहू बनै कि प्रेमकी पराग में तू पर अरु प्राणजुहै नायक ताहि परायेहाथ मतिपारै ॥ सवैया ॥ तू नहीं मानत मेरो कह्यो अपने मनमान सयानपुभारी। देखबेको ललचावति ज्यों कछु घोसनि तैं यह रोस निहारी ॥ नेहकहूं नँदनन्दन सों लगि जैहै तो फेरि न ह्वैहै रारी। बेचत प्राणनु क्यों परहाथ फँसै मति प्रेमफँदा ब्रजनारी ॥ १५२ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवतबचतनहरतहठिलालनदृगबरजोर ॥
सावधानकेबटपरा येजागतकेचोर ॥ १५३ ॥

यह नायक के नेत्रनपै आसक्त सो नायक के नेत्र याके मनको जोरावरी हरि लेत हैं सो नायिका सखी सों कहतिहै ॥ कबित्त ॥ राखत सलूक मिले मदन महीपतिसों सुतनु सरकि जात कानन की ओर हैं। चपरि हरति ब्रजबालनके मन धनु मरति भरोर भरे यौवन मरोर हैं ॥ जागतिहूं मुसै सावधान को बिवश करै चप-

लचितौन शरवेधतसजोर हैं । मोसों कहि आली ब्रजलाडिले के लोलहग ठग हैं कजाक हैं डकैत हैं कि चोर हैं ॥ १५३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० नावकशरसेलायकैं तिलकुतरुणिइतताकि ॥
पावकझरसीझमकिकै गईझरोखाझांकि॥१५४॥

सवैया ॥ साजे शृंगार भरीछबिभार हिये बिरहागिनि बारिगई है । चोपभरी कछु ओखे सों ओट झरोखेहू नेक निहारिगई है ॥ पावक ज्वालसि बाल बिलोकिकै नावक तीर ले मारिगई है । झांकतबाँक लखी जबते तबते सुधिमोहिं बिसारिगई है ॥ १५४ ॥ मद्कल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥ नायकको ध्यान नायिका ॥

दो० कबकीध्यानलगीलखौं यहघरलगिहैकाहि ॥
डरियतुभृंगीकीटलौं मतवहई ह्वैजाहि ॥ १५५ ॥

यह नायिका नायकके ध्यानमें लीन ह्वैरहीहै सो सखी सखीसों कहतिहै॥सवैया॥ ठाढ़िबिलोकति हौं कबकी यह पूरण प्रेमहिये ढरिबो । पाहन की पुतरी ह्वै रही बिसरयो उर अञ्चलको धरिबो ॥ ध्यानहिं ध्यानमें जो कबहूं यहहोय वही तौ कहाकरिबो । याको धरा अबलागिहै काहि कहागति है हियहै डरिबो ॥ १५५ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० सरसतुपोंछतुलखिरहतु लगिकपोलकेध्यान ॥
करलै यों पाटल बिमल प्यारीपठयेपान॥१५६॥

यह नायिका की आसक्ति नायिक सों अधिक है सो वाके हाथ के पान देखिनो चेष्टा करतु है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्राण पियारे तिया पठये करहेतु हिये सरसैं परसैं । पाटल पानसरे सुथरे जिनकी छबि देखि हिये तरसैं ॥ पोंछत हैं पटलै कबहूं कबहूं दरसैं कबहूं परसैं । ध्यानकपोलन को कबहूंकरि चुंबत यों रसकी बरसैं ॥ १५६ ॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १७ लघु २१ ॥

दो० अधरधरतहरकेपरति ओठदीठिपटजोति ॥
हरितबांसकीबांसुरी इन्द्रधनुषरँगहोति॥१५७॥

यह नायिका मुरली बजावति देखि रीझी है सो वह शोभा भांति २ कर क-

हतिहै। सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ चलिदेखुरी बानकसी बनिकैब्रजराज कोलाड़िलो आवतहै। मुखचन्द कि चीर मरीचिनसों बलिनैन चकोर सिरावत है॥ जब दीठिकी ओठनको पटको मुसकानको रंग मिलावतहै। तो बाँसुरी बाँस हरेकिललासुरचापकेरंगदिखावतहै॥१५७॥पयोधर अक्षर ३६गुरु१२लघु २४॥

दो० कितीनगोकुलकुलबधू काहिनकहिसिखदीन॥
कौनेतजीनकुलगली ह्वै मुरलीसुरलीन॥१५८॥

यह मुरलीकी धुनिपै रीझी सो सखी शिक्षादेतिहै तासों वा मुरलीकी मोहनता कहतिहै॥ सवैया॥ कौनठगोरीभरी हरीआज बजाई है बांसुरिया रंसभीनी। तान सुनी जिनहीं जिनहीं तिनहीं तिन लाज बिदाकर दीनी॥ घूमे खरी खरी नंद के बार नवीनी कहा अरु बालप्रवीनी। या ब्रजमण्डलमें रसखान सुकौन भटू जुलटू नहिं कीनी॥ १५८॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लईसोंहसीसुननकी तजिमुरलीधुनिआन॥
कियेरहतदिनरातदिनकाननलागेकान॥१५९॥

यह मुरली सुनी है तबते और कछूसुनत नाहीं सो सखी सखी सों कहति है॥ सवैया॥ मोहनकी मुरलीकि अली जबते मधुरी धुनि कानपरी है। बाल भई तबहीं ते लटू इहकाज समाज सबै बिसरी है॥ कानन कानन ओर किये रहै कामखरी कलकानकरी है। बात सुहात न होत कछू सुनिवेकि मनो मन आनिकरी है॥ १५९॥ पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० उरलीनैअतिचटपटी सुनिमुरलीधुनिधाय॥
हौंनिकसीहुलसीसुतोगोहुलसीउरलाय॥१६०॥

यह मुरली सुनि सबकाम छांड़ि हुलसी निकसी वह न देख्यो तब जु कछू अवस्थाभई सो सखी सों कहतिहै॥ सवैया॥ भौनके कोन में बैठीहुतीहों कछू गृहकाज के साजपगीरी। बारककान्हकरी तबहीं मुरली धुनि प्रानन आनलगीरी॥ हौं लखिवेको उछाह भरी निकरी वह दीठपर्यो न ठगीरी। नैननको अरु काननको मनको तबते तलावेली लगीरी॥ १६०॥ बारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८॥

दो० फूलेपदकतलैफरी पलकटाक्षकरवार॥
करतबचावतबिबिनयन पाइकघाइहजार॥१६१॥

यह दोनों के नेत्र आपसमें कटाक्षन की चोट करत हैं औरन की दृष्टि बचावत हैं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ अंजनु अङ्ग अछेकछनी सिखये नव यौवन नायक हैं। फांदत फूले निसांकगहे करवाल कटाक्ष सहायकहैं ॥ ओटको ढालकरी पलकैं ललकैं अति जोम सों लायक हैं। बिबिलोचन चोट बचावति हैं तिय नैन कि मैनके पायकहैं ॥ १६१ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० कहतनटतरीझतखिझतमिलतखिलतलजिजात॥
भरेभौनमेंकहत हैं नैननहींसों बात ॥ १६२ ॥

यह दोऊ भरे घरमें नेत्रनहीमें सब बात करत हैं सो सखी सखी सों कहतिहै॥ सवैया ॥ जानतलालकि जानतबाल सखीहूं कहूंनलखी अनखातें। नीचे है नारिं निहारि प्रसिद्ध भो मानु बसीठ दुहूंकी दिशातें ॥ चोरिही में चितचोरिबो जोहनि नैन निहोरिबोनेहकीघातें। रीझि रिसानि हँसी हठसों हम नैननही निबही सब बातें॥ १६२ ॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० डीठिपरतबाँधीअटनि चढ़िआवतनडरात ॥
इतेंउतेंचितदुहुनके नटलोंआवतजात॥ १६३॥

यह दोउनके चित्त लगे हैं सुपरस्पर अपने अटापरतें निशंक देखतहैं सो सखी सखी सों कहतिहै ॥ कवित्त ॥ नैनके झरोखे आनि डीठ न परत बांधि गाढ़े सुत जोरते तनाव कर राखे हैं। अनमिल्यो तनमिले इमिकरिभाषतहै ऐसी मन- मिले मिलिबो न अभिलाखेहैं ॥ नटकी अटकी कहूंनटकीसी कलाकत ताऊपर दौरि दौरि दोऊ रसचाखे हैं। बड़े बंस बीच रसरीतनसों बांधिराखे चढ़ि उतरत तेतौ उतरत भाखे हैं ॥ १६३ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० जुरेदुहुनकेदृगझमकि रुकेनझीनेचीर॥
हलकीफौजहरौलज्यों परतगोलपरभीर॥१६४॥

यह दोउन के नेत्र घूंघटकी ओट पेलकै मिलगये हैं सो सखी सखीसों कहति है ॥ सवैया ॥ बैठी अलीगणमें नवनागरि आयो तहां चलिप्यारो बिहारी। लालकी दीठि बचायबे को मुख घूंघट ओट करयो न निहारी ॥ नैनसों नैन उमंग मिले न रहैं पटओट कितो पचिहारी। रोकिसकै न हरौलकी फौज ज्यों गोलपै आनिपरै भरु भारी ॥ १६४ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो॰ दूरचोखरोसमीपकौ लेतमानिमदमोद ॥
होतदुहुनकेदृगनहीं बतरसहँसीबिनोद ॥ १६५॥

यह दोऊ नेत्रनहीं में बात करत हैं मिलिबेको सो सुख मानतहैं सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ प्रेमप्रभाव दुहूनके कैसेहू मोपै बनै न बखानत हैं। चारुकली चितचातुरी की रस भाइभरी उर आनतहैं ॥ यद्यपि दूरखरे उतऊंचे समीपही को सुख मानत हैं ॥ १६५ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो॰ इनहरकेहँसिकैइतै इनसोंपीमुसकाय ॥
नैनमिलेमनमिलगयेदोऊमिलवतगाय ॥१६६॥

यह दोऊ गाय मिलवति मन मिलगये सो सखी सखीसों कहतिहै नायिका परकीया ॥ कवित्त ॥ उन हँसिहांकिये यहांकी है नईसीगाय मोपै न परति कालिह केते दुख दये हैं। इन मुसकाय कही भृकुटीनचाय येतौ गाइहैं हमारीही लै औरसो बनाये हैं॥ कहैं कविकृष्ण मिले बैननिसों बैन अरु नैनन सों नैनरीझि रसवश भये हैं ॥ १६६ ॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो॰ यदपिचवाइनचीकनी चलतिचहूंदिशिसैन ॥
तदपिनछांड़तदुहुनकेहँसीरसीलेनैन ॥ १६७ ॥

यह नायिका परकीया है सो दोउनके नेत्र देखत हैंतब हँसतहीं हैं सो सखी सखीसों कहति है॥ सवैया ॥ नेहकी चाहलगी जबते तबते रसरीति रचै नहिंदांकी। देखतहीं उर मोदभरे डरकौन करै कुलकान कहांकी ॥ यद्यपिसैन चवायबसी उपहास समेत चलै चहुँघाकी। तदपि छांड़तनैन दुहूं के रसीलीहसीर बिलोकनि बांकी ॥ १६७ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १२ लघु २० ॥

दो॰ झूठेजानिनसंग्रहे मनमुंहनिकसेबैन ॥
याहीतेमानोकिये बातनकोबिधिनैन॥ १६८ ॥

यह दोऊ आपसही में बात करतिं हैं सो सखी सखीसों कहतिहै कविकी उक्तिइ होय ॥ कवित्त ॥ इत ब्रजराज को कुंवररसराशि उत बीनिवृषभानुकी कुंवरि बखानिकै। ठाढे हितवाढे आप आपने अटानिपै करत कटाक्ष मनमथ की कलानिकै ॥ बदन ते निकसे ते झूठेहोत मेरेजान बैननको संग्रहहू करयो न यह जानिकै। परम प्रबीन दोऊ याही ते परस्पर लोचननहीं में बतरात सुख मानिकै ॥ १६८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० चितवतचितवतहितहिये कियेतिरीछेनैन ॥
भीजेतनदोऊकँपत क्योंहूंजपनिवरैन ॥ १६९ ॥

यह दोऊ परस्पर आसक्त हैं सो जप करत देखत हैं सखीसों सखी कहतिहै ॥ कवित्त ॥ यमुना के तीर नरनारिनकी भारी भीर तदपि निरख बिनु हरषे रहे न हें। कहै कविकृष्ण चित्तचौंपसों लगत अनुरागसों पगत उमगत मनमैनहैं ॥ योंहीं दिन वितवति हियहेत जितवत चितवत चायसों तिरीछे किये नैन हैं। भीजे पट कंपत न काहू ते चपत दोऊ अधिक जपत क्योंहों जप निबरेन हैं॥ १६९ ॥ चल अच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० घामघरीकनिवारियेकलितललितअलिपुंज ॥
यमुनातीरतमालतरुमिलतिमालतीकुंज॥१७०॥

यह नायिका परकीया वाग्विदग्धा स्वयंदूती नायिका की बचन नायिका सों॥ सवैया ॥ चारुतमालकलिन्दी के तीर उसीर सुगन्ध समीर हरै मन। मालतीमाल निकुंजनि में मिल गुंजत मत्त मधुब्रत के गन॥ फूलनि के भरि झूमलता रही बेलि लगी लपटायतमालन। कीजै बिरामघरीक इतै यह आतप नेक निवारिये लालन॥ १७० ॥ पयोधर अच्चर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छ्वैछिगुनीपहुँच्योगिलति अतिदीनतादिखाय ॥
बलिबावनकोब्यौतसुनिकोबलितुम्हैंपत्याय१७१॥

यह नायक के चित्तकी बृत्ति ललचो देखि नायिका प्रीति बढाइबे को कहत है पर सापराध देखि खंडिताहू कहै सो सम्भव है॥ कवित्त ॥ झूठकाजको बनाय मिसही सों घरआय सेनापति श्याम बतियानिउघरतहैं। आयकै समीप कर हंसी सुसयानहीसों हँसि हँसि बातनहीं बांहको धरत हैं॥ मैंतो सब रावरेके बातजियमें की जानि जाके परपंच येते हमसों करतहैं। कहां ऐसी चतुराई पढी आप यदुराई अंगुरीपकरि पहुंचे को पकरत हैं॥ १७१ ॥ मरकटअच्चर ३१ गुरु १७ लघु १४॥

दो० लाईलालबिलोकिये जियकीजीवनमूल ॥
रहीभौनकेकोनमें सोनजुहीसीफूल ॥ १७२ ॥

यहि नायिका को सखी ले आई है सो नायकसों कहति है॥ सवैया ॥ जाहि बिलोकिकै प्यारे बिहारी सम्हारतुम्हैं सब भूल रही है। आईसुजीवनमूलबिलो-किये तो हितसों अनुकूलरही है॥ बैठी दुकूलमें अंगदुराय तऊ तनकी द्युति फूल

रही है। चौंधत लोचन भौनके कोनमें सोनजुही मनो फूल रही है॥१७२॥करभ अक्षर ३२ गुरु १२ लघु २०॥

दो० रहीपैजकीनीजमें दीन्हींतुम्हैंमिलाय॥
राखहुचंपकमाललौं लालहियेलपटाय॥१७३॥

यह सखी नायिका को लै आई है सो नायकसों कहति है॥ कवित्त॥ नैननके तारेनमें राख्यो प्यारी पूतरीकै मुरलीज्यों लायराखौदसन बसनमें। राखौभुजबीच बनमाली बनमालकरि चंदनज्यों चतुर चढायराखौ तनमें॥ केशोराय कलकंठ राखी बलिकंठुलकै करमकरम क्योंहूं आनी है भवनमें। चंपककलीसी बाल सूंघि सूंघिदेवतासी लेहु प्यारेलाल इन्हें मेलिराखौ मनमें॥१७३॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३॥

दो० अथसमागम॥दोऊचाहभरेकछूचाहतकह्योकहैन॥
नहियाचकसुनिसूमलौं बाहरनिकसतबैन॥१७४॥

यह प्रथमदर्शनागममें लाजके अधिक दोऊ कछु कहिसकत नाहीं सो सखी सखीसों कहतिहै॥ सवैया॥ आजदुहूं मिलिकै सजनी मनमोहनसों मनसाकरि जोर मिलायो। ठाढेठगेसे रहैं टकलायकै नेहको मेह तहीं बरसायो॥ चाह भरे दोऊ चाहकह्यो कछू बोलतयोंसुख आवनपायो। सूमज्यों आवै न भौनते बाहिर द्वारसुनै जबै याचकआयो॥१७४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० करसमेटकचभुजउलटिखयेसीसपटुडारि॥
काकोमनबांधैनयहजूराबांधनहारि॥१७५॥

यह जूराबांधननायिका नायक ने देखी सो सखी कहतिहै जाति बर्णन होय॥ कवित्त॥ नैन ऐन मैन कैसे बान खरसानभरे आनन की वोपकछू जैसी चन्दपूरे की। कनकलतासी भुज उरज उतंग गोरे खुलिखुभी कंचुकी सबजरंग रूरेकी॥ कहैं कविकृष्ण मटकीली चारुचितवन चटकीली चूनरी चटक चोखेचूरेकी। सीस पटुडारि भुज उलटि समेटि कच क्योंन मन बांधै बांकी बांधनि सुजूरेकी॥१७५॥ मत्त अक्षर ४१ गुरु ७ लघु ३४॥

दो० सहजसचिक्कनश्यामरुचिशुचिसुकंधसुकुमार॥
गनततमनमथअपथलखिबिथरेसुथरेबार १७६॥

यह नायिकाके केशनकी शोभापै आसक्त नायक है सो सखी सौं कहत है ॥ सवैया ॥ निंदतहै तमपुंज प्रभा जिनकी छबिहेरि शिलीमुख हारे। श्यामसुगंध सुभाय सचिक्कन सोहत सुंदर लांबेलबारे॥ मैनमनो अपने करिकै मखतूलकेचीर बनाय संवारे। देखतही मन थाकिरह्यो नवनागरि केश सुदेश तिहारे ॥१७६॥ नर अक्षर ३३ गुरु १५ लघु १८ ॥

दो० वेईकरब्यौरनवहै ब्यौरौकौनबिचार ॥
जिनहीउरझ्योमोहियोतिनहीसुरझेबार॥१७७॥

यह नायककी आसक्ति नायिकाके हाथनपै है सो बार ब्योरत देख नायक सखी सौं कहत है ॥ सवैया ॥ पानलसेसरसीरुहसे तिनऊपर मों हग भौंर भये हैं। केलिफिरोसी खरोसुथरी अंगुरीनखचंदप्रभानि छये हैं॥ वेही हैं हाथ वहै चलिबो कहि यामें बिचार कहाधौं ठये हैं। मेरोहियो उरझ्यो जिनसों तिन ब्योरे नहीं सुरझे कच पे हैं ॥ १७७ ॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० छुटेछुटावतजगततेसटकारेसुकुमार ॥
मनबांधतबेनीबँधे नीलछबीलेबार ॥ १७८ ॥

यह नायिका के बार पै नायक को मन रीझ्यो है सो नायक सों कहति है अथवा सखी सों कहति है कविहूकी उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ सोहत है सुकुमार महा उपमा को सिवार न लागत नेरे। मेचक लांबे सुगन्ध लसैं छबि देखत नेक फिरैं नहीं फेरे ॥ छूटे छुटावत हैं जगते इनके कछु कोटिक टोना सेहेरे। नीरज नैनी कहा कहिये मनुबांधत बेनी बँधे कच तेरे ॥१७८ ॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कुटिलअलकछुटिपरतमुख बढ़िगोइतोउदोत ॥
बंक बिकारी देत ज्यों दाम रुपैया होत ॥ १७९॥

यह मुखपै बार छूटेते शोभा अधिक भई है सो सखीसों कहतिहै सखी नायक सों कहै नायिकासों कहै कविकी उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ मान भुजंग निकंज चढी मुख ऊपर एकछुटी अलकैंयों। कारी महासटकारीहै सुंदर भीजरही मिलसौंरेनहीं यों ॥ लटी लटवाइलकी ढिग चोर गई बढिकै छबि आननकीयों। आंकवही दिये दूजेबिकारिकै होत रुपैयन ते मुहरैं ज्यों॥१७९॥ अहिधर अक्षर ४३ गुरु ५ लघु ३८॥

दो० खोरिपनचभृकुटीधनुष बेधिकुसुमतजिकान ॥

हनततरुनमृगातिलकसरसुरकभालभरितान १८०

यह नायिका कुलटा ललाट शृङ्गारहै सो सखी नायक सों कहतिहै ॥ सवैया॥ कुञ्चितभौंह कमानकसे तिहिको जिहिके शिर खोरि बनाई। ताकूं लै तीर करथो तिल है सुरकै गहितापर भाल लगाई॥ खेलत यौबनके बनमें यह साज शृँगार मनोज अठाई। हेरिहनैंजु प्रवीनकुरंगन हीनदया उरकै कठिनाई॥ १८० ॥धारन अक्षर १७ गुरु ११ लघु २६ ॥

दो० नीकोलसतललाटपर टीकोजटितजराय ॥
छबिहिंबढ़ावतरबिमनोंशशिमण्डलमेंआय १८१

यह ललाट पर टीको है ताकी उपमा सखी नायक सों कहतिहै कविकी उक्ति हू होय॥ सवैया॥ यौबन ज्योति जगामग होति शृँगार प्रभा सरसावत है। रीझ रहैं लखिलालके लोचन मोदहिये भर आवत है॥ सोहत वाको जरायजरयो तिय भाल महाछवि छावत है। मानहुँ चन्द्रकेमण्डल में दिननायक शोभा बढ़ावतहै॥ १८१॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० झीनेपटमेंझलमली झलकतिओपअपार ॥
सुरतरुकीमनुसिन्धु में लसीसुपल्लवडार ॥१८२॥

यह झुलमलनिको बर्णन है सो उपमा सखी नायक सों कहै सखी सों कहै कविकी उक्ति॥ कवित्त॥ जाके करणाभरण बृप के दिवाकरसे नयनदीवरणकी छबिसरसाति है। अधर सुधाधर सुधाधर से बदनमें किलकति ललित कपोलन की काँति है॥ अंतर ललित झीनिवसन में झलमली कहै कविकृष्ण झलकतऐसी भाँति है। मेरे जान सागर में डार कलपद्रुमकी पल्लवनि सहित प्रगट दरसातिहै॥ १८२॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० तियमुखलखिहीराजरी बेंदीबढ़तबिनोद ॥
सुतसनेहमानोलियोबिधुपूरनबुधगोद॥ १८३॥

यह नायिकाके भाल हीरेकी बेंदी है सो सखी शोभा उपमा नायक सों कहति है॥ कवित्त॥ कनकवरण तन नगर मगर होत सो उपजवास भौन आसपास कीनो है। सकल सकेलरूप बिरचि बिरंचिबाल खीन कटिकठिन उरोजयुग पीनो है॥ ललित ललाट पर हीराकी लसत बेंदी कहै कविकृष्ण देखे मनु नेह भीनोहै।

मेरेजान मोदभरि अधिक सनेहकरि पूरन मयङ्कभरि अङ्कबुधलीनोहै ॥१८३॥पयो-
धर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० कहतसबैबेंदीदिये आँकुदशगुनोहोत ॥
तियललाटबेंदीहियेअगणितबढ़तउदोत १८४ ॥

यह बेंदीदियेते मुखकी शोभा अधिक बढ़ी है सो नायक सखी सों कहै अथवा
सखी नायक सों कहै कबिकी उक्ति होय ॥ कवित्त ॥ यौवनमों मिलि जगमगत
अपार ओप महामुनिहूको मनदेखे रसभीतहै। कहैं कविकृष्ण छबिपुञ्जननसों छा-
जिरह्यो सरस शृङ्गार बरसत सुधासोत है॥ सब कोऊ ऐसीही कहत महिमण्डल
में बेंदी के दियेते आंक दशगुनो होतहै। वह नरनागरिके ललित लिलारपरबेंदी
लगीबढ़ो अगणित सुउदोत है ॥१८४॥ पयोधरअक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० पँचरँगरँगबेंदीखरी उठतऊगिमुखजोति ॥
पहिरेचीरचनोठिया चटकचौगुनीहोति ॥१८५॥

यह नायिका नायकने जैसी छबि देखी है तैसी भांति सखी सों कहति है ॥
सवैया ॥ बेंदी लिलार लसै पचरंग लसे बिडरेकच कुञ्चित भौंहैं। अञ्जनरञ्जित
दीरघनैनचढ़ेगथकेमुकतानथ सोंहैं ॥ चीरचनोठिया में चमकै कछु गोरो अगोटि
उरोज उठो हैं। भेदकी बातलखी बतरात परोसिनि सोहै कपोल हँसोंहैं ॥१८५॥
मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २० ॥

दो० भाललालबेंदीललन अक्षतरहेबिराज ॥
चन्द्रकलाकुजमेंबसीमनोंराहुभयेभाज ॥१८६॥

यह शिखनख में ललाटबेंदी आखतन की शोभा है सो सखी नायकसों क-
हति है अरु कबिहूकी उक्तिहोय ॥ कवित्त॥ उदय समयकेरे राका चन्दसों बदन तैसी
ईतरुनकी उमंगगोरे रंगमें । कंचनकी नारी बारीकाकरेजी सारी तामें दुरयो दरश-
तुकचबृंदतउमंगमें ॥ भालपर रोचनको बिन्दुछबि देत तामें अलखलसै ज्यों गङ्ग
सरसुती संगमें। त्रासु मानितमको सुधाकरकी कलामानों बसी है निशङ्कहै अवनिसुत
अंगमें ॥१८६॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० भाललालबेंदीछये छुटेबारछबिदेत ॥
गह्योराहुअतिआहकरिमनुशशिसूरसमेत १८७

यह नायिकाके ललाटपै बेंदी है अरु तापर बार छूटे हैं सो शोभा सखी कहति

है नायकसों अथवा सखीसों कविहूकी उक्तिहोय ॥ सवैया ॥ रमैरुचिसों रति संपति दंपति कान्ति दुहूंकी तहां सरसी। वृषभानुसुता घनमें जिमि दामिनि श्याम के संग सुरंग लसी ॥ क्रीड़तवारछुटे इकवार तिरछेनाहकैं मुखओपगसी। मनो रोपसों दोऊगहे स्वरभानु अचानक आनि कै भानुशसी ॥ १८७ ॥ त्रिकल अक्षर ३६ गुरु ६ लघु ३० ॥

सो० मङ्गलबिंदुसुरङ्ग मुखशशिकेसरिआड़गुरु ॥
इकनारीलहिसङ्गरसमयकियलोचनजगत १८८

यह शिखनखमें ललाट शृङ्गार है सो सखी सखी सों कहति है ॥ सवैया ॥ मङ्गल बिंदु सुरंग विराजत भामिनि भाल महाछवि छायो। आनन चन्द्र कलापरिपूरण केसरि आड़मनों गुरुआयो ॥ कृष्णकहैं इकनारी में आई मनों परिपूरण योग लखायो। नैनभरे रस की बरषा करि चैनसमूह हिये उमगायो ॥ १८८ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० हाहाबदनउघारिदृग सफलकरैंसबकोय ॥
रोजसरोजनकैपरैं हँसीशसीकीहोय ॥ १८९ ॥

यह मुखवर्णन है सो सखी नायिका सों कहै है नवोढा के प्रसंग में बनै मान छुड़ायवे को कहै तो बनै ॥ कवित्त ॥ लोचन लहैंको फल सफल हमारो करि प्यारी मारग प्यारे को सनेहरस लीनकरि। तैंहीं पाई परम निकाईकी अवधिअब येतो वृषभानु की कुंवरि अरचीन करि ॥ टारि पट घूंघट को हाहाहे उघारि मुख निजछवि प्रानपसों पीकेनैन पीनकरि। कंजछवि छीनकरि शशिहि मलीनकरि सौतिकको दीनकरि प्यारेको अधीन करि ॥ १८९ ॥ करभ अक्षर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥ डिठौना वर्णन ॥

दो० लौनेमुंहडीठनलगै योंकहिदीनोईठि ॥
दूनीह्वैलागनलगी दियेडिठौनाडीठि ॥ १९० ॥

यह डिठौनाको वर्णन नायक सखी सों कहै नायिकासों कहै सखीसों कहै ॥ सवैया ॥ तोहिंलखिरतिकी द्युति लाजत राजतओप शृंगार कियेते। भौंहनकी बरुणीन परै छबिमोहन न्यायही नील लियेते ॥ सुंदरआनन डीठिनलागे कह्यो अलियों हितमानहियेते। तोमुखतें अवलोकन लागी सीदूनी है डीठिडिठौना दियेते॥ १९० ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु १३ लघु २६ ॥

दो० सूरबिदितहूमुदितमन मुखसुखमाकीओर ॥

चितैरहैचहुँओरते निहचलचखनचकोर १९१॥

यह मुख बर्णन सखी नायिकासों कहै ॥ कवित्त ॥ सुखको समूह बृषभानु की कुँवरितेरे मुखको प्रकाश जगमगत अमंद है। याहिलें बिलोकि छबिहरषि लट्टू है भट्ट भांवरी भरत फिरै प्यारी नँदनन्दहै॥ चोसहू निशाकोरहै बिधिन बिनानकछू देखे उमगत अति आनंद को बृंद है। सकल बिलास छोड़िएक आश लगेरहैं भौंर जानें कमल चकोर जानें चंदहै ॥१९१॥ करभअच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० पियतियसोंहँसिकैकह्यो लख्येडिठौनादीन ॥
चंद्रमुखी मुखचंद्रते भलो चंद्रसम कीन॥१९२॥

यह डिठौना बर्णन नायक नायिकासों कहै अथवा शृङ्गारकर्ता सखीसों कहै सवैया ॥ प्यारी को चारुशृंगार निहारि हिये पतिके अतिमोद भरयो है। चाहि-चपोड़ा कही मुसकाय सही बिधिरूप सकेल धरयो है ॥ जामुखकी अकलंक प्रभा सकलंक मयंक खरो निदरयो है। सो मुखतें वै डिठौनादे आजु भलो यह चन्द्र समान करयोहै ॥ १९२ ॥ करभ अच्छर ३२ गुरु १६ लघु १६ ॥

दो० छप्योछबीलीमुखलसैं नीलेअंचलचीर ॥
मनौंकलानिधिझलमलै कालिंदीकेनीर॥१९३॥

यह नायिकाके मुखको बर्णन सखी नायकसों कहै है नायिकाहू सों कहै है ॥ कबित्त ॥ भावती तिहारी को गईही लैद गिरिधारी ताहि देखें मेरीमन परयो छबि भोरमें। कृष्ण प्राणप्यारे सुखकारे की लुनाई होत जगरमगर वाके सोनेसे शरीरमें ॥खंजनभँवर बिंबकीरकी प्रभा निदर बदनदुराय बैठी झीने नीलेचीरमें। मेरेजान पूरण कलानिसों झलमलात परदसुधानिधि कलिंदजाके नीरमें॥१९३॥ मच्छ अच्छर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० कियेहायचितचारुलगि बजिपायलतुवपायँ ॥
पुनिसुनिसुनिमुखमधुरधुनि क्योंनलाललचायँ१९४

यह नायिका की आसक्तिजानि सखी नायक सों प्रीति बढायबेको कहतिहै बाणीबर्णन।।कबित्त॥ गजगतितेरी हेरीलट्टू तबहींते भयो तापै सुनी पायलकी झनक सुहाईरी। तबहींते वाके उरलागी अति चटपटी तुव मिलबेको ललकतु है कन्हाईरी ॥ बीनाके सुरनहूते मधुरसरसधुनि कालिहकतहूंते उनबानी सुनिपाईरी। काहेते न वाके उरमदनमरूरि उठैं कहोसेही कहन जरूर तोसों आईरी ॥१९४॥ पयोधर ३६ गुरु १२ लघु २४ ॥

दो० छिनकुछबीलेलालवह नहिंजौलगिवतरात॥
ऊषमयूषपियूषकी तौलगभूखनजात॥१९५॥

यह नायिका के बातकी मधुराई सखी नायकसों कहति है॥ सवैया॥ जाके सुने धुनिवीनकहा गहि लाज पिकी बनभागतहै। जो सुनिकै कविकृष्ण कहैं मुनि की मनसा अनुरागत है॥ जौलौं छवीले लला तुमसों वह बाल न बातन पागत है। तौलौं मयूष पियूषकी ऊषकी भूख न कैसे हुं भागत है॥ १९५॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० जरीकोरगोरेबदन बढ़ीखरीछबिदेख॥
लसतमनोंबिजुरीकिये शारदशशिपरिवेख॥१९६॥

यह नायिका के मुखपै किनारी की शोभा नायक सखीसों कहतहै॥कवित्त॥ पून्योसीतिहारी लाल प्यारे में निहारी वह तारेसम मोतिनशृंगारही को साजिकै। झीनोपट गावत चांदनीसी अवदात लोचनचकोरनको देखे दुखभाजिकै॥ सेनापति तन सुखसारीकी किनारी बीच नारी के बदन अछिबविरही छाजिकै। पूरणशरदचन्द बिंबताके आसपास रह्यो है अखण्ड मानो मण्डले विराजिकै॥ १९६॥ मराल अक्षर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० नासामोरनचायदृग करीककाकीसोंह॥
कांटेसीकसकतहिये गड़ीकटीलीभोंह॥१९७॥

यह नायिकाकी भौंह नचायवेकी चेष्टा देखि नायक सखीसों कहतहै॥सवैया॥ मोतनहेरिपरोसिन सों बतरातकछू बनते रसछाकी। एक रती रतिकी द्युतिहोतन वाकी निकाईलखे समताकी॥ नाक चढ़ाई ऊँचाय के ओठ नचायकरी दृगसौंह ककाकी। वा छविकी वेकटीलीसी भौंह करेजेमें शूलसी सालतवाकी॥ १९७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥ नेत्र वर्णन॥

दो० वारोंबलितोदृगनपर अलीखंजमृगमीन॥
आधीडीठिचितौनजिहिकियेलालआधीन॥१९८॥

यह नायिकाके नेत्रनकी अधखुली चितवन देखि नायक आधीनभयो सोसखी नायकसों कहै॥ कवित्त॥ कारे झपकारे रतनारे अनियारे सोहैं सहज ढरारे मन मथ मतवारे हैं। लाजभरिभोरे भारे चपल तिहारेतारे सांचेकेसे ढारे प्यारे रूपके उधारे हैं॥ आधीचितवनहीमें आधीन किये तैं हरि दोनेसे बशीकरके लोने ये नि-

हारेहैं। कमलकुरंग मीनं खंजन भँवर वृषभानुकी कुवँरि तेरे नैननपै वारेहैं ॥ १९८॥ मच्छ अच्चर ४१ गुरु ७ लघु ३४ ॥

दो० चमचमातचंचलनयन बिचघूंघटपटझीन ॥

मानहुंसुरसरिताबिमलजलउछलतयुगमीन॥१९९॥

यह नायिका के नेत्रन की शोभा सखी नायकसों कहै नायकहू नायिकासों कहै सखी सखीसों कहै छन्दउपजाति ॥ कबित्त ॥ रूपकी रसाल आज देखी ब्रजबाल एक केती शोभासनी वाके सोनेसे शरीर में । टारयो न टरत वह भाव मो हियेमें क्योंहूं बैठी मुखढांकि गुरु लोगनकी भीरमें ॥ कहै कबिकृष्ण अतिचहल विशाल वांके लोचनयुगल झलकत झीने चीर में । क्यों न मनहोय छबि निरखि अधीर बिंब मीन उछलत मानों सुरसरि नीरमें ॥ १९९॥ मराल अच्चर३४गुरु१४लघु२०॥

दो० करैचाहसोंचुटकिकै खरेउड़ोहैंनैन ॥

लाजनवायेतरफरत करतखुदीसेनैन ॥ २०० ॥

यह नायिका के नेत्र लाज अरु चाह दोउनके बश खुदीसी करत हैं सो सखी सखीसों कहतिहै नायिकाहूसोंकहै ॥ कबित्त ॥ नैननवनागरिके कोतलतुरंग अङ्ग छबि की तरंग रंग रंगन धरैं धरैं । मदन प्रबीन तिन्हैं फेरिबो सधावतहैं घूंघटकी ओट ऐसे कौतुक करैंकरैं ॥ कीने चाह आवगीसों चूकिकै चपलहोत खरोई उड़ो हैं ते उमंग सों भरैं भरैं । लाजबागवस तरफरातताइभरे करतखुदीसी पगधरत हरैं हरैं ॥ २००॥ मच्छ अच्चर ४० गुरु ८ लघु ३२ ॥

दो० शायकसमघायकनयन रँगेत्रिबिधरँगगात ॥

झखौबिलखिदुरिजातजललखिजलजातलजात॥२०१॥

यह नायिका के नेत्रनकी शोभा सखी नायकसों कहै ॥ कबित्त ॥ शायक से घायकहैं तीखनतरलदृग श्वेतश्याम अरुण त्रिबिधरँगे गातहैं । कहैं कबिकृष्णजाके उरमेंभिदत ताहि सुधि न रहत गातझूमि घननातहैं ॥ येतेपर भौंहैं ये बिषम बिषअञ्जन सों याहीतें बिशेषबिथा बरसरसात हैं । सफरी बिलोकिजल बिलखि दुरितमृग भटकत बिपिन लजात जलजातहैं ॥ २०१ ॥ मडूकअच्चर ३० गुरु १८ लघु १२॥

दो० बरजीतेशरमैनये ऐसेदेखेमैन ॥

हरिनीकेनैनानते हरिनीकेयेनैन ॥ २०२ ॥

कवित्त ॥ चेरेकीने खंजन कसेरेकीने कंजपुंज उपमाको नेरे अलिरंचक लगे नहें। सोहत विशाल ये रसालसाल सौतिन के देखे मनुहरत कान्त चित्तचैन हैं॥ चपलकटाक्षवर जीतत मदन शर सुखके निकर और देखेऐसे नैन हैं। कामदुख दन्दनीके वृषभानुनन्दनीके हरिणके नैननते हरि नीकेनैन हैं॥ २०२ ॥ पयोधर-अक्षर ३५ गुरु १२ लघु २३ ॥

दो० रसशिंगारमंजनकिये कंजनभंजनदैन॥
अंजनरंजनहूंबिना खंजनगंजननैन ॥ २०३ ॥

यह नायिकाके नेत्रनकीशोभा सखीसों नायक कहै नायिकाहू सों कहै नायिका नायक सों कहै सखी सों कहै ॥ सवैया ॥ कंजकुरंग गुमानन गंजन मीनन अंजन हैं अनियारे। खंजन मीननके मदभंजन अंजनहूं बिन ये कजरारे॥ लाज समाज सुशीलहँसी रसरंगभरे विधिमैनसुधारे। कृष्णकहा उपमा कहिये तिय या जगमें दृग तेरे उजारे॥ २०३ ॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२ ॥

दो० जोयुगगतसिखयेसवै मनोमहामुनिमैन॥
चाहतपियउद्वैतता सेवतकातनुनैन ॥ २०४ ॥

यह नायिका के नेत्रनकी शोभा अरु तरुणाईको बिलोकि पियकी चाह सखी नायकसों कहति है सखीसखीसों कहै ॥ कवित्त ॥ लीनोउपदेश महा मुनिमनिकेतकी योगकलाकुशल बिमल बिलसंत हैं। तनमन मोहनसों एकभयो चाहतहै कानन को सेवत जगत ज्योतिवंत हैं॥ कृष्णप्राणप्यारेकी दुहाई जिन्हें देखतही विरह कलेश दुख सकलनिहंत हैं। सरलसुभाई उरमांझभरे स्याम छवि प्यारी तेरे नैन मनहरनमहंतहैं॥ २०४॥ वारन अक्षर ३८ गुरु १० लघु २८ ॥

दो० सवअँगकरराखीसुधर नायकनेहसिखाय॥
रसयुतलेतअनंतगत पुतरीपातुरराय॥ २०५ ॥

यह नायिका की पुतरीन की शोभा अरु नेह की अधिकाई सखी नायकसों कहति है ॥ सवैया ॥ चारुप्रभा पलकैं झलकैं मृदुपीतपटी पहरे सुथरी हैं। नायक नेह सिखायसवै रसभेदसुभाय प्रवीन करीहैं ॥ कृष्णकहै अतिचाइनसों गतलेत मनो बहुभाय भरी हैं। लेतरिझाय मनैं अतिचातुर पातुरराय किधौं पुतरी हैं॥ २०५ ॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३० ॥

दो० लागतकुटिलकटाक्षशर क्योंनहोहिबेहाल॥

कढ़तजुहियेदुशालकर तऊरहतनटशाल॥ २०६॥

यह नायिकाके नेत्र नायक के हृदय में खुभे हैं सो सखी नायिका सों कहति है नायक सखी सों कहत है नायिका सखी सों कहै ॥ कबित्त ॥ भिदेसूधेतीर तेतो तनको बढ़ावैं पीर जानि यहबात जिय सकलडरात हैं। लागे ब्रजनागरि के कुटिलकटाक्ष शर क्यों न होहिं बिकल बिहाल सबगात हैं॥ बिक्रमनिधान अति पारथ के बानहूते मेरे जान इनके अनोखे उतपात हैं। देखिये न भाय उरकढ़क दुशालकर येतेपर देखो नटशाल रहिजात हैं॥ २०६॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥ नासाबेधबर्णन॥

दो० बेधतअनियारेनयन बेधतकरननिषेध॥
बरबटबेधतमोंहियो तोनासाकोबेध॥ २०७॥

नायिका की शोभा नायक नायिकासों कहत है॥ कबित्त॥ अनियारे नैन बेधत बिराने मन को अचरिज पैन सहज सुभायकै। तोहिं निरखत बृषभानु की कुँवरि अद्भुतकी तरंगरही मेरेउर छायकै॥ सोहैं किधौं नेहकी निकाई को निकेत किधौं सुख मधुकरने सुरुचिकीनों आयकै। बरबटमेरो हियेबेधत है प्यारीतेरी नासिकाको बेध मन रहै क्योंधिरायकै॥ २०७॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० बेसरमोतीद्युतिझलक परी अधरपरआय॥
चूनोहोयनचतुरतिय क्योंपटुपोंछ्योजाय॥२०८॥

यह नायिकाके ओंठऐसे उज्ज्वल हैं जो मोतीकी झलक ललाई के मध्य श्वेत झलकतिहै सो यह चूनो जानिपोंछत है सखी याकी भ्रांति दूर करति है अथवा नायिका झलकदेखि निश्चय करति है सो सखी कहतिहै जो नायिका सखी सों कहै तो रूपगर्बिताहूहोय॥ सवैया॥ आज शृंगार बन्यो तियतेरो जगामग ज्योति समूह करै। देखत आरसी बारहीबार हिये हरिको कहि क्यों न हरै॥ बेसरके मुकता की प्रभा अति उज्ज्वल आनि परी अधरै। होय न चूनो लग्यो मृगलोचनि क्यों पटसों अब पोंछपरै॥ २०८॥ त्रिकल अक्षर ३९ गुरु ९ लघु ३०॥

दो० इहद्वैहीमोतीसुगथ तूनथगरबनिशाँक॥
जेहिपहिरैजगदृगग्रसतिलसतहँसतसीनाँक २०९

यह नायिकाके नथकी शोभा सखी कहतिहै अन्योक्ति कवित्तहू में बनै॥ कवित्त॥ सुरनसमेत नाकहीते कहति मुकतनियुत मुकति पुरीसी दीसतिहै। कहैं कविकृष्ण मनमोहन के मोहिवे को मोहनीकी सिंधिमान शोभा सरसतिहै॥ तोहिं पहरेते जग नयन ग्रसति अति छबि बरसत मानों नासिका हँसति है। अहे नथ उर में बिशाक तू गरवकरि द्वैही मुकता के मोल सहति लसति है॥ २०९॥ बारनअच्चर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० जटितनीलमणिजगमगति सींकसुहाईनाँक॥
मनोअलीचंपककली बसिरसलेतनिशाँक॥२१०॥

यह नायिका की सींक पहिरेते सुशोभा भई सो उपमा सखी सखी प्रति कहत है सखी नायक सों कहति है नायिकाहू सों कहै॥ कवित्त॥ पूरण मयङ्ककेकि अङ्क में लसत किरु नैक निरखतही हरत चितचेत है। प्रफुलित पङ्कज पै सोहै करहाट किधौं तिलको सुमनु सुख सौरभ समेत है॥ नीलमणि जटित छबीली तेरी नाकपर सींक यों लसति महाशोभा को निकेत है। मिरेजान मुकुलित चम्पककी कलिकापै बैठ्यो अलि सांकु सो निशांक रस लेत है॥ २१०॥ मदकल अच्चर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० यदपिलौंगललितौतऊ तूनपहरइकआँक॥
सदाशङ्कबाढ़ी रहै रहै चढ़ीसी नाँक॥ २११॥

यह नायिकाकी नाक में लौंगहै ताकर नाक चढ़ीसी दीखतहै सो सखी नायिकासों कहति है॥ कवित्त॥ किधौं है बदनछबि दीपको सुमेरु जाकी जगर मगर ज्योति पूरण प्रकासिका। किधौं कविकृष्ण चारुचम्पक की कलिका है सहजसुगन्ध निकसत जाते स्वासिका॥ तदपि लवंग अति ललित लसत तऊतू मतपहरि डरपति उरदासिका। मानके भरमभूलि मोहन बिलोकिरहे मृगनैनी निरख चढ़ीसी तेरी नासिका॥ २११॥ मराल अच्चर ३४ गुरु १४ लघु २०॥

दो० सालतहैनटशालसी क्योंहूंनिकसतनाहिं॥
मनमथनेजानोकसी खुभीखुभीजियमाहिं॥२१२॥

यह नायिकाकी खूबीकी शोभा नायक सखीसों कहत है॥ सवैया॥ राधिका प्यारी के आननपै छबि तीनहूं लोककी आनि गुभीहै। मैं निरखी जबतेतबते मनमेरो लुभाइ तहांही खुभी है॥ रूपके बोहथ कान में वाके बिराजत

ओप अनूप सुभी है। सालत है जु मनोज के नेजेकी नोक मनो उरमांझ खुभी है॥ २१२॥ चलअक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० लसतसेतसारीढप्यो तरलतरयोनाकान॥
पर्योमनोसुरसरिसलिलरविप्रतिबिम्बविहान २१३

यह तरयोना वर्णन सखी को बचन नायकहू को बचन कविहूकी उक्ति होय॥ कबित्त॥ सुंदरसुकुमार बालचलति मराल चाल अंगअंग भूषन समूह बरसत है। कँदरप दरपन लसतकपोल फल बलदेव सुखमासमूह बरसत है॥ नगमणि जटित जरायको तरौना तामें ताकी झलकनि ऐसी भाउ परसत है। सुरकांति मणि की मयूषन सों मिल्यो एक प्रभाकर मानों प्रतिबिम्ब दरसत है॥ २१३॥ चल अक्षर ३७ गुरु ११ लघु २६॥

दो० तरवनिकनककपोलद्युति बिचबीचहीबिकान॥
लाललालचमकतचुनी चौकाचिह्नसमान॥२१४॥

यह तरवनिकी शोभा सखी नायकसों कहै तो सुरतगोपना होय॥ कबित्त॥ आजकीबनक बरणत न बनत तेरी छबिकी छटान की घटासी उमँगति है। दमकत सरस शृंगारकी अपार ओप यौवनकी कांति जगाज्योतिसी जगतिहै। कनक तरयोननुकी ललित कपोलन की द्युति में समायगई अद्भुत गति है। कृष्ण प्राण प्यारे कीसी चारु चमकति ये तो लाललालचुनी चौका चिह्न सी लगति है॥ २१४॥ पयोधर अक्षर ३६ गुरु १२ लघु २४॥

दो० लैसमुरासातियश्रवण यौंमुकतनद्युतिपाय॥
मानोपरसकपोलके रहेस्वेदकनछाय॥ २१५॥

यह मोतिनकी मुरासा को वर्णन करिकहै तो लक्षिता जानिये॥ कबित्त॥ आज नवनागरीकी आगरी बिलोकी छबि देखबेको नैनललचाय ललकत हैं। कहैं कविकृष्ण वही बानिक बिलोकि ठगे रीझिपगे तबते लगत पुलकत हैं॥ आननकी छबि लखि चन्द द्युतिमन्दहोत ताइपै अनोखे चिह्न अति सरसत हैं। मेरे जान परस कपोल इनहूंकेउर लखो है प्रस्वेद तेई बूंद झलकत हैं॥ २१५॥ मदकल अक्षर ३५ गुरु १३ लघु २२॥

दो० नखशिखरूपभरेखरे तोमांगतमुसकानि॥
तनतनलोचनलालची येललचाहींबानि॥ २१६॥